Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 2

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 44

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

2 नवम्बर 2017 ई. 12 सफर 1439 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

कैसा कादिर हमारा ख़ुदा है और हम कैसे सौभाग्यवान हैं कि उस के कुरआन पर ईमान लाए

और उस के रसूल का अनुकरण किया और क्या बदनसीब वे लोग हैं जो इस आदभुत कार्य करने वाले वाले पर ईमान नहीं लाए।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

82. ब्यासीवां निशान - यह भविष्यवाणी है जो अनेकों बार मेरी पत्रिकाओं में लिखी जा चुकी है-

انّ اللہ لا یغیّر ما بقومٍ حتّٰی یغیّروا ما بانفسھم انّہٗ اوی القریۃ

अर्थात् ख़ुदा उस ताऊन को उस जाति से दूर नहीं करेगा और अपना इरादा परिवर्तित नहीं करेगा जब तक लोग अपने हृदयों की दशा न बदलें और ख़ुदा अन्तत: उस गांव को अपनी शरण में ले लेगा। और कहा कि لو لا الاکرام لھلك المقام۔ अर्थात् यदि मैं तुम्हारे सम्मान को दृष्टिगत न रखता तो मैं उस सम्पूर्ण गांव का सर्वनाश कर देता तथा उन में से एक भी न छोड़ता। पुन: कहा कि- وما کان اللہ لیعذبھم وانت فیھم और ख़ुदा ऐसा नहीं है कि उन सबको तबाह कर देता, हालांकि तू उन्हीं में रहता है।

स्मरण रहे कि ख़ुदा तआला का यह वाक्य कि انّہٗ اوی القریۃ इसके अर्थ यह हैं कि ख़ुदा तआला एक सीमा तक अज़ाब देने के बाद उस गांव को अपनी शरण में ले लेगा। ये अर्थ नहीं हैं कि उसमें ताऊन कदापि नहीं आएगी। आवा (اوی) का शब्द अरबी भाषा में उस शरण देने को कहते हैं कि जब कोई व्यक्ति किसी सीमा तक आपदा ग्रस्त होकर पुन: अमन में आ जाता है। जैसा कि अल्लाह तआला का कथन है - اَلَمۡ یَجِدۡکَ یَتِیۡمًا فَاٰوٰی (अज़्ज़ुहा 7) अर्थात् ख़ुदा ने तुझे अनाथ पाया तथा तुझे अनाथों के संकटों में ग्रसित देखा फिर शरण दी और जैसा कि पुन: कहा وَّاٰوَیۡنٰھُمَاۤ اِلٰی رَبۡوَۃٍ ذَاتِ قَرَارٍ وَّ مَعِیۡنٍ (अल्मोमिनून 51)अर्थात् हमने ईसा और उसकी माँ को यहूदियों के अत्याचार के पश्चात् तथा हज़रत ईसा को सूली देना चाही हमने ईसा तथा उसकी मां को शरण दी और दोनों को एक ऐसे पवर्त पर पहुंचा दिया जो सब पर्वतों से ऊंचा था अर्थात् कश्मीर का पर्वत जिसमें रुचिकर पानी था तथा बड़ा आरामदायक स्थान था और जैसा कि सूरह कहफ़ में यह आयत है। فَاۡوٗۤا اِلَی الۡکَھۡفِ یَنۡشُرۡ لَکُمۡ رَبُّکُمۡ مِّنۡ رَّحۡمَتِہٖ (अल्कहफ 17)अर्थात् गुफ़ा की शरण में आ जाओ। इस प्रकार से ख़ुदा तुम पर अपनी दया करेगा अर्थात् तुम अत्याचारी बादशाह के आतंकों से मुक्ति पाओगे अत: आवा का शब्द हमेशा उस स्थान पर आता है जब एक व्यक्ति किसी सीमा तक कोई कष्ट उठा कर फिर कार्य में लाया जाता है। यही भविष्यवाणी क़ादियान के सम्बन्ध में है। अत: केवल एक बार कुछ तीव्रता के साथ ताऊन क़ादियान में आई। इसके पश्चात् कम होती गई यहां तक कि इस वर्ष में क़ादियान में एक व्यक्ति भी ताऊन से नहीं मरा, जबकि आस-पास के गांवों में सैकड़ों लोग ताऊन का शिकार हुए।

83. तिरासीवां निशान - एक बार मैं अपने उस चौबारे में बैठा हुआ था जो छोटी मस्जिद से संलग्न है जिसका नाम ख़ुदा तआला ने '**बैतुल फ़िक्र**' रखा है तथा मेरे पास मेरा एक सेवक हामिद अली पैर दबा रहा था, इतने में मुझे इल्हाम हुआ ترٰی فخذًا اَلیمًا अर्थात् तू एक कष्ट देने वाले रान को देखेगा। मैंने हामिद अली से कहा कि इस समय मुझे यह इल्हाम हुआ है। उसने मुझे यह उत्तर दिया कि आप के हाथ पर एक फुन्सी है शायद इसी की ओर संकेत हो। मैंने उससे कहा कि कहां हाथ और कहां रान। यह विचार व्यर्थ और अनुचित है फिर फुंसी तो दर्द भी नहीं करती तथा इल्हाम के ये अर्थ हैं कि तू देखेगा न कि अब देख रहा है। तत्पश्चात् हम दोनों चौबारे से उतरे ताकि बड़ी मस्जिद में नमाज़ पढ़ें। नीचे उतर कर मैंने देखा कि दो व्यक्ति घोड़े पर सवार मेरी ओर आ रहे हैं। दोनों बिना काठी के दो घोड़ों पर सवार थे और दोनों बीस वर्ष से कम आयु के थे। वे मुझे देख कर वहीं ठहर गए तथा उनमें से एक ने कहा यह मेरा भाई जो दूसरे घोड़े पर सवार है रान के दर्द से बहुत बीमार है और विवश है इसलिए हम आए हैं कि इसके लिए आप कोई दवा बताएं। तब मैंने हामिद अली से कहा कि ख़ुदा की प्रशंसा और आभार कि मेरा इल्हाम इतनी शीघ्र पूरा हो गया कि मात्र इतनी ही देर लगी कि जितनी सीढ़ी से उतरने में लगी है। शैख़ हामिद अली अब तक मौजूद है जो गांव "थह ग़ुलाम नबी" का निवासी है तथा इन दिनों मेरे पास है। कोई व्यक्ति दूसरे के लिए अपने ईमान को नष्ट नहीं कर सकता अपितु यदि मध्य में मुरीद होने का सम्बन्ध हो और कोई व्यक्ति अपने मुरीद को यह कहे कि मैंने अपने लिए एक झूठा चमत्कार बनाया है तू मेरे लिए साक्ष्य दे। तो वह अपने हृदय में अवश्य कहेगा कि यह तो एक धोखेबाज़ तथा बुरा व्यक्ति है। मैंने अकारण इसके हाथ में हाथ दिया है। इसी प्रकार मैंने इस पुस्तक में जितनी भविष्यवाणियां लिखी हैं मेरे हज़ारों मुरीद (शिष्य) उनकी सच्चाई के साक्षी हैं। एक मूर्ख कहेगा कि मुरीद की साक्ष्य का क्या विश्वास है। मैं कहता हूं कि इस साक्ष्य जैसी कोई साक्ष्य ही नहीं, क्योंकि यह सम्बन्ध मात्र धर्म के लिए होता है और मनुष्य उसी का मुरीद बनता है जिसे अपने विवेक में समस्त संसार से अधिक पवित्र

पृष्ठ 8 पर शेष

123 वां
जलसा सालाना क़ादियान
दिनांक 29, 30, 31 दिसम्बर 2017 ई. को आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 123 वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए दिनांक 29, 30 और 31 दिसम्बर 2017 ई.(जुम्अ:, हफता व इतवार) की स्वीकृति दी है। जमाअत के लोग अभी से इस शुभ जलसा सालाना में उपस्थित होने की नीय्यत करके दुआओं के साथ तैयारी आरम्भ कर दें। अल्लाह तआला हम सब को इस ख़ुदाई जलसे से लाभ उठाने की क्षमता प्रदान करे। इस जलसा सालाना की सफलता व बा-बरकत होने के लिए इसी तरह यह जलसा लोगों के लिए मार्ग दर्शन हो इसके लिए विशेष दुआएँ जारी रखें। धन्यवाद (नाज़िर इस्लाह व इरशाद मरकज़िया, क़ादियान)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

पहले मसीह की वफात हो गई है हज़रत मसीह ही इमाम महदी हैं

मुहम्मद हमीद कौसर, कादियान

(भाग-4)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का एलान

हज़रत मिर्ज़ा और ग़ुलाम अहमद साहिब कादियानी मसीह मौऊद और इमाम महदी अलैहिस्सलाम ने स्पष्ट तौर पर घोषणा फरमाई: " मैं मुसलमानों के लिए महदी यानी आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का प्रतरिूप हूँ और ईसाइयों के लिए मसीह मौऊद अर्थात मसीह नासरी का प्रतिरूप बनकर आया हूँ। "

(सीरतुल महदी भाग 3 पृष्ठ 541 रिवायत नंबर 554)

इसी तरह फरमाया: " अत: आने वाले का नाम जो महदी रखा गया। इस में यह संकेत है कि वह आने वाला धर्म का ज्ञान ख़ुदा से ही प्राप्त करेगा और कुरआन और हदीस में किसी शिक्षक का शागिर्द नहीं होगा। अत: मैं कसम खाकर कह सकता हूँ कि यह मेरी स्थिति है। कोई भी यह साबित नहीं कर सकता है कि मैंने किसी व्यक्ति से कुरआन या हदीस या किसी तसफीर का कोई सबक भी पढ़ा है। या किसी मुहद्दिस या मुफस्सिर की शर्गिदी धारण की है। अत: यही महदवियत है जो मुहम्दी नबुव्वत के तरीके पर मुझे प्राप्त हुई है और धर्म का ज्ञान बिना किसी माध्यम के मेरे पर खोले गए। और जिस प्रकार ऊपर वर्णन किए गए कारण से आने वाला महदी कहलाएगा इसी प्रकार वह मसीह भी होगा। क्योंकि उस में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की रूहानियत भा प्रभाव दिखाएगी। अत: वह ईसा पुत्र मर्यम भी कहलाएगा और जिस प्रकार आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की रूहानियत ने अपने घुण महदियत को उस के अन्दर फूंका इसी प्रकार हज़रत मसीह अलैहिस्सालम की रूहानियत ने अपना गुण रूहुल्लाह होने का उस के अन्दर डाला।"

(अय्यामुस्सुलह पृष्ठ 168,169 रूहानी खज़ायन जिल्द 14 पृष्ठ 394,395)

आख़री ज़माना का महदी जिसका दूसरा नाम मसीह मौऊद है

ऐसा ही अगर एक इंसान महदी और ख़ुदा से शिक्षा पाने वाला हो लेकिन रूहानी रोग दूर करने के लिए उसे रूहुल कुदुस (पवित्र आत्मा) प्रदान नहीं की गई हो तब भी वह लोगों पर हुज्जत पूरी नहीं कर सकता और रूहुल कुदुस के समर्थन का सब से उत्तम नमूना हज़रत मसीह हैं अत: इस ज़माने में तर्कसंगत पहलू से भी रूहुल कुदुस के समर्थन की ज़रूरत है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति अपने आप तर्कसंगत और वर्णन की गई दलीलों से ऐसा प्रभावित हो जाता है कि अगर इन के विरुद्ध को मोजज़ा भी दिखाई दे तो कुछ असर नहीं करता इसलिए पूर्ण सुधारक के लिए हमेशा यह आवश्यक शर्तें हैं कि वह इन दोनों गुणों से सुशोभित हो यानी वह ख़ुदा का विशेष शिष्य हो और फिर प्रत्येक क्षेत्र में रूहुल कुदुस से समर्थन पाता हो।

* और आख़री ज़माना के महदी के लिए जिस का दूसरा नाम मसीह मौऊद भी है दो आदमियों का प्रतिरूप होने के कारण इन दोनों गुणों का पूर्ण रूप से पाया जाना अत्याधिक आवश्यक है क्यों कि जैसा कि इस आयत से समझ जाता है। ज़माना की ख़राब अवस्था यही चाहती है कि ऐसे गन्दे ज़माना में जो अन्तिम ज़माना का इमाम आए वह ख़ुदा से महदी हो और धार्मकि मामलों में किसी और का शागिर्द न हो और फकीरों के मामलों में किसी का मुरीद हो और ऐसा ही रूहुल कुदुस से समर्थन पाने वाला हो औ्र उन बीमारियों में से जो दुनिया में फैली हुई हैं प्रत्येक प्रकार की रूहानी बीमारी को दूर करने में समर्थ हो और स्पष्ट है कि कोई व्यक्ति कई बार बौद्धिक परीक्षाओं के कारण मरीज़ होते हैं और कुछ वर्णन की गई बातों के कारण और ईसा होने के लिए शर्त है कि रूहुल कुदस से समर्थन पाकर प्रत्येक बीमार को अच्छा करे और स्पष्ट है कि एक आदमी अगर केवल अक्ली ग़लती से शंकाओं में पीड़ित है उस को तसल्ली देने के लिए केवल यह काफी नहीं कि धोखा से नजात प्राप्त कर सके जब तक कि इसी मार्ग से ग़लती न निकाली जाए जिस तरीका से ग़लती पड़ी है। इस लिए मैं बार बार कहता हूं कि यह ज़माना जिस में हम रह रहें हैं मसीह को भी चाहता और महदी को भी।"

(अरबईन नम्बर 2 रूहानी खज़ायन भाग 17 पृष्ठ 358.359)

भविष्यवाणियों में आने वाले मसीह के बारे में आने वाले मसीह के बारे में लिखा है कि वह दोनों प्रकार की बरकतें और शारीरिक और रूहानी पाएगा। इसलिए संकेत किया गया था कि रूहानी और अविनाशी बरकतें जो पूर्ण हिदायत और ईमानी कुव्वत के प्रदान करने और अनुदान और मआरिफ़ और सूक्ष्म बातें और इलाही रहस्य सिखाने को दर्शाता है उनके पाने के लिहाज़ से वह महदी कहलाएगा। और वे बरकतें मुहमादी फैज़ के स्रोत से उस को मिलेंगी। क्योंकि शुद्ध महदवियत बिना किसी बात की मिलावटहज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के गुणों में से है। इस लिए इस कारण से ख़ुदा के निकट इस मुजद्दिद का नाम अहमद और मुहम्मद होगा। और यह भी संकेत दिया गया था कि जो शारीरिक और नश्वर यानी सांसारिक बरकतें हैं जो हमेशा नहीं रह सकतीं और सीमित और नष्ट होने योग्य हैं जिनसे मतलब यह है कि मित्रों और ग़रीबों और दुर्बलों और लौटने वालों के बारे में उनकी सेहत या भलाई या कामयाबी और शांति या ग़रीबी से मुक्ति के बारे में बरकतें प्रदान करना और ज़ालिम दरिन्दों के बारे में उन की हलाकत और तबाही के बारे में जो वास्तव में ग़रीबों और नेकों के बारे में बरकते हैं। इलाही कहर की ख़बर देना जैसा कि हज़रत मसीह ने यहूदियों के बारे में दी थी। इन बरकतों के प्रदान करने के लिहाज़ से उन सांसारिक बरकतों को प्राप्त करने के लिहाज़ से भी इस ज़माना में भी इंसानों की ज़िन्दगी में बहुत से आराम के साधन पैदा हो गए हैं। वह ईसा पुत्र मर्यम कहलाएगा। क्योंकि जो बरकतें उच्च स्तर की और बहुत अधिक मात्रामें हज़रत मसीह को दी गई थीं वह यहीं हैं। इसीलिए आख़री इमाम के लिए इन बरकतों को स्रोत हज़रत मसीह ठहराए गए और चूंकि हकीकत ईसवियत यही है इसलिए इस हकीकत को पाने वाले का नाम ईसा इब्ने मर्यम करार पाया। जैसा कि महदवियत के लिहाज़ से जो हकीकते मुहम्मदिया थी इस का नाम महदी रखा गया।

(अय्यामुस्सुलह पृष्ठ 171,172 रूहानी ख़जायन जिल्द 14 पृष्ठ 397.398)

और इस मुजद्दि के तीन नाम हैं जो सहीह हदीसों में वर्ण किए गए हैं अर्थात हकम और महदी और मसीह। और जैसा कि रिवायत किया गया है हकम के नाम का यह कारण है कि मसीह मौऊद उम्मत के मतभेदों से समय प्रकट होगा और उन में अपने मज़बूत बातों के साथ फैसले देगा। जो इंसाफ के करीब होंगे। और उस के ज़माना में कोई आस्था एसी नहीं होगी जिस में कोई मतभेद न हो। अत: वह सच्चाई को धारण करेगा और झूठ और गुमराही को छोड़ देगा और महदी के नाम का कारण जैसा कि रिवायत में कहा गया है कि वहज्ञान को उल्मा से नहीं लेगा और ख़ुदा तआला के निकट से हिदायत पाएगा। और मसीह के नाम का कारण जैसा कि रिवायत में वर्णन किया गया है धर्म के प्रकाशन के लिए तलवार और नेज़े से काम न लेगा बल्कि सारा भरोसा उसका आसमानी बरकतों के छोने पर होगा और उस का हथियार विभिन्न प्रकार के गिड़गिड़ाना और दुआ होगी। अत: ख़ुदा का शुक्र अदा करो कि वह तुम्हारे ज़माना में और तुम में मौजूद है और वही तो है जो इस समय तुम से बातें कर रहा है।"

(नजमुल हुदा रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 14 पृष्ठ 92-98)

और इस ज़माने में मुसलमानों के साथ भी बहस व्यर्थ है क्योंकि जिन हदीसों और रिवायतों और विश्वासों के आधार पर हम से बहस करना चाहते हैं। उनके बारे में ख़ुद उनके अपने बीच में बहुत बड़े अंतर हैं कोई कहता है कि महदी फातिमी होगा। कोई कहता है अब्बासी होगा कोई कहता है कि हुसैनी होगा। कोई कहता है कि पैदा होगा। कोई कहता है कि वह गुफा से निकलेगा। कोई कहता है कि वह उम्मत में से एक आदमी होगा। कोई कहता है कि वह ईसा ही महदी होगा अत: आश्चर्य की बात है कि इतने मतभेद हैं कि फिर यह हमारा मुकाबला करते हैं। वे नहीं समझते कि आने वाला हकम है। वह सारी बहसों को समाप्त करता है और आपसी मतभेदों के मध्य भी एक सच्चा तरीका प्रस्तत करती है और मानने के योग्य है।

(मलफूज़ात जिल्द 5 पृष्ठ 21)

(शेष.....)

(शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

ख़ुत्बः जुमअः

आज अल्लाह तआला के फज़ल से मज्लिस अन्सारुल्लाह यू.के का सालाना इज्तिमा शुरू हो रहा है इस संबंध में मैं अंसार को एक महत्वपूर्ण और बुनियादी चीज़ पर ध्यान दिलाना चाहता हूं और वह नमाज़ है ।

नमाज़ हर मोमिन पर फर्ज़ है लेकिन चालीस साल की उम्र के बाद अल्लाह तआला की इबादत और नमाज़ की तरफ अधिक ध्यान होना चाहिए कि समय तेज़ी से आ रहा है जब मैंने अल्लाह तआला के सामने उपस्थित होना है और वहां हमारे सभी कार्यों का हिसाब होना है।

नमाज़ के पढ़ने की तरफ जब भी अल्लाह तआला ने ध्यान दिलाया है, तो यह ध्यान दिलाया जाता है कि नमाज़ में नियमितता भी हो, सभी नमाज़ें समय पर अदा हों और जमाअत के साथ हों। नमाज़ की स्थापना करने का मतलब ही नमाज़ समय पर और जमाअत के साथ अदा करना है।

अन्सारुल्लाह को खासकर सबसे अधिक इस बात की ओर ध्यान देना चाहिए कि उनका हर सदस्य नमाज़ जमाअत का आदी हो बल्कि हर नासिर को स्वयं की परीक्षा करनी चाहिए और यह प्रयास करना चाहिए कि वह नमाज़ जमाअत के साथ अदा करे, केवल बीमारी और मजबूरी की अवस्था में नमाज़ जमाअत से अदा करने की बहुत कोशिश करनी चाहिए। अगर निकट कोई मस्जिद और नमाज़ केंद्र नहीं है तो क्षेत्र के कुछ लोग किसी घर में इकट्ठे होकर नमाज़ जमाअत से पढ़ सकते हैं अगर यह सुविधा नहीं तो घर के लोग मिलकर नमाज़ जमाअत से पढ़ें इससे बच्चों को भी युवाओं को भी नमाज़ और जमाअत से नमाज़ का महत्व का पता चल जाएगा।

अतः अन्सारुल्लाह वास्तविक रूप में अन्सारुल्लाह उसी समय बन सकते हैं जब अल्लाह तआला के धर्म को कायम करने और इस पर अनुकरण करवाने में अपनी भूमिका अदा करें। अगर अल्लाह तआला की इबादत जो इंसान की पैदायश का उद्देश्य है इस पर अनुकरण नहीं हो रहा और जिन के निगरान बनाए गए हैं उन से अनुकरण नहीं करवा रहे या अनुकरण करवाने की कोशिश नहीं कर रहे, अपने उदाहरण नहीं पेश कर रहे तो केवल नाम के अन्सारुल्लाह हैं

अतः प्रत्येक नासिर को विशेष रूप से अपने समीक्षा करनी चाहिए कि किस हद तक वह नमाज़ के पाबन्द हैं किस हद तक वे अपना नमूना अपने बच्चों के सामने पेश कर रहे हैं उनकी नमाज़ की स्थिति और अवस्था क्या है। क्या केवल एक कर्तव्य और बोझ समझ कर अदा किया जा रहा है या वास्तव में ख़ुदा तआला की इच्छा को प्राप्त करने के लिए हम सब यह कर रहे हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने नमाज़ के महत्व, इसके फर्ज़ होने, इसकी हिक्मत, इसे पढ़ने का तरीका, इसका उद्देश्य इसका दर्शन और समय के दर्शन आदि विभिन्न विषयों पर विभिन्न तरीकों से बार बार विभिन्न अवसरों पर और स्थानों पर ध्यान दिलाया है। आप के कुछ उपदेश इस समय मैं आप के सामने प्रस्तुत करूंगा जो इस के महत्व और हिक्मत को उजागर करेंगे।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 29 सितम्बर 2017 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ ۔

आज अल्लाह तआला के फज़ल से मज्लिस अंसारुल्लाह यू.के का सालाना इज्तिमा शुरू हो रहा है इस संबंध में मैं अंसार को एक महत्वपूर्ण और बुनियादी चीज़ की तरफ ध्यान दिलाना चाहता हूं और वह है नमाज़ । नमाज़ हर मोमिन पर फर्ज़ है लेकिन चालीस साल की उम्र के बाद, जबकि यह एहसास पहले से बढ़ कर पैदा हो जाना चाहिए कि मेरी उम्र के हर दिन के बढ़ने से मेरे जीवन के दिन कम हो रहे हैं ऐसी स्थिति में अल्लाह तआला की इबादत और नमाज़ की तरफ अधिक ध्यान होना चाहिए कि समय तेज़ी से आ रहा है जब मैंने अल्लाह तआला के सामने उपस्थित होना है और हमारे सभी कार्यों का हिसाब होना है। अत: एक ऐसी हालत में एक मोमिन की, हर उस आदमी को जिसे मरने के बाद की ज़िन्दगी और क़यामत के दिन पर ईमान है, चिंता होनी चाहिए कि हम अल्लाह तआला का भी हक़ अदा करने वाले हों और उसके बन्दों का भी हक निभाने वाले हों और इस स्थिति में अल्लाह तआला के समक्ष उपस्थित हों, जब अपनी कोशिशों के अनुसार यह अधिकार अदा कर रहे हों।

नमाज़ के पढ़ने की तरफ जब भी अल्लाह तआला ने ध्यान दिलाया है, तो यह ध्यान दिलाया जाता है कि नमाज़ में नियमितता भी हो, सभी नमाज़ें समय पर अदा हों और जमाअत के साथ हों। नमाज़ की स्थापना का आदेश है और नमाज़ की स्थापना करने का मतलब ही नमाज़ समय पर और जमाअत के साथ अदा करना है लेकिन देखने में आया है अन्सारुल्लाह वाले भी अपनी रिपोर्टों की समीक्षा करते होंगे और समीक्षा करनी चाहिए कि बावजूद इसके कि अंसार की आयु एक दृढ़ता और गंभीरता की उम्र है नमाज़ जमाअत के साथ अदा करने की तरफ ध्यान नहीं है जो होना चाहिए। अत: अंसारुल्लाह को खासकर सबसे अधिक इस बात की ओर ध्यान देना चाहिए कि उनका हर सदस्य नमाज़ जमाअत का आदी हो बल्कि हर नासिर को स्वयं की परीक्षा करनी चाहिए और यह प्रयास करना चाहिए कि वह नमाज़ जमाअत के साथ अदा करे, केवल बीमारी और मजबूरी की अवस्था में नमाज़ जमाअत से अदा करने की बहुत कोशिश करनी चाहिए। अगर निकट कोई मस्जिद और नमाज़ केंद्र नहीं है तो क्षेत्र के कुछ लोग किसी घर में इकट्ठे होकर नमाज़ जमाअत से पढ़ सकते हैं अगर यह सुविधा नहीं तो घर के लोग मिलकर नमाज़ जमाअत से पढ़ें इससे बच्चों को भी युवाओं को भी नमाज़ और जमाअत से नमाज़ का महत्व का

पता चल जाएगा।

अत: अन्सारुल्लाह वास्तविक रूप में अन्सारुल्लाह उसी समय बन सकते हैं जब अल्लाह तआला के धर्म को कायम करने और इस पर अनुकरण करवाने में अपनी भूमिका अदा करें। अगर अल्लाह तआला की इबादत जो इंसान की पैदायश का उद्देश्य है इस पर अनुकरण नहीं हो रहा और जिन के निगरान बनाए गए हैं उन से अनुकरण नहीं करवा रहे या अनुकरण करनावे का कोशिश नहीं कर रहे, अपने उदाहरण नहीं पेश कर रहे तो केवल नाम के अन्सारुल्लाह हैं। आज तलवारों और तीरों का कोई युद्ध नहीं है, जहां सहायकों की आवश्यकता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने तो फरमाया है कि, हमारे विजयी होने का हथियार दुआ है।(मल्फूज़ात जिल्द 9 पृष्ठ 28 प्रकाशन1985ई यू. के) तो अन्सार बनने के लिए इस दुआ के हथियार का उपयोग करने की ज़रूरत है। इस के लिए बहुत ज़रूरत है कि अल्लाह तआला के बताए हुए तरीके के अनुसार इस हथियार का इस्तेमाल किया जाए और जब यह होगा तभी हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत का भी सही हक़ अदा करने वाले होंगे अन्यथा आप ने बार बार यही फरमाया है कि अगर मेरी बातों को नहीं मानना और अपने अंदर पवित्र परिवर्तन पैदा नहीं करना अपनी इबादतों के हक़ अदा नहीं करने तो मेरी बैअत में आने का कोई फायदा नहीं।

(मल्फूज़ात जिल्द 10 पृष्ठ 140 प्रकाशन1985ई यू. के)

अत: प्रत्येक नासिर को विशेष रूप से अपने समीक्षा करनी चाहिए कि किस हद तक वह नमाज़ के पाबन्द हैं किस हद तक वे अपना नमूना अपने बच्चों के सामने पेश कर रहे हैं उनकी नमाज़ की स्थिति और अवस्था क्या है। क्या केवल एक कर्तव्य और बोझ समझ कर अदा किया जा रहा है या वास्तव में ख़ुदा तआला की इच्छा को प्राप्त करने के लिए हम सब यह कर रहे हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने नमाज़ के महत्व, इसके फर्ज़ होने, इसकी हिक्मत, इसे पढ़ने का तरीका, इसका उद्देश्य इसका दर्शन और समय के दर्शन आदि विभिन्न विषयों पर विभिन्न तरीकों से बार बार विभिन्न अवसरों पर और स्थानों पर ध्यान दिलाया है। आप के कुछ उपदेश इस समय मैं आप के सामने प्रस्तुत करूंगा जो इस के महत्व और हिक्मत को उजागर करेंगे।

नमाज़ों को नियमित और निरन्तरता से पढ़ने के बारे में नसीहत फरमाते हुए एक जगह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मज्लिस में वर्णन फरमाया कि

नमाज़ों को नियमित रूप से निरन्तरता से पढ़ो, फरमाया कि कुछ लोग केवल एक ही समय की नमाज़ें पढ़ लेते हैं और याद रखिए कि नमाज़ें माफ़ी नहीं होतीं यहां तक कि रसूलों को भी माफ नहीं हुईं। एक हदीस में आया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास एक नई जमाअत आई, उन्होंने नमाज़ की माफी चाही। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जिस धर्म में कर्म नहीं वह धर्म ही कुछ, इसलिए इस बात को ख़ूब याद रखें और अल्लाह तआला के आदेशों के अनुसार अपने कर्म कर लो। फरमाया कि अल्लाह तआला फरमाता है कि अल्लाह तआला के निशानों में से एक यह भी निशान है कि आसमान और धरती इसके आदेश से स्थापित रह सकते हैं अगर अल्लाह तआला की इच्छा हो तभी पृथ्वी और आकाश स्थापित हैं अन्यथा नहीं फरमाया कि कई बार वे लोग जिनकी तबीयत भौतिकी की ओर इच्छुक हैं कहा करते हैं कि नेचरी धर्म अनुसरण को योग्य है क्योंकि अगर स्वास्थ्य के सिद्धांतों का पालन नहीं किया गया किया तो तक्वा और पवित्रता से क्या लाभ होगा। लोगों ने अपने अपने स्वयं के दर्शन बना रखे हैं रहे हैं आप फरमाते हैं कि अत: ध्यान रहे कि अल्लाह तआला के निशानों में से यह भी एक निशान है कि कुछ समय दवाई बेकार रह जाती हैं और स्वास्थ्य की सुरक्षा में किसी काम नहीं आ सकतीं न दवा काम आ सकती है न हकीम काम आता है लेकिन अगर अल्लाह तआला की आज्ञा हो तो उलटा भी सीधा हो जाता है इसलिए अवश्यक है कि अल्लाह तआला के साथ संबन्ध पैदा किया जाए जरूरी है और इसके लिए सबसे अच्छा साधन है इस की इबादत और इबादतों में नमाज़ का अदा करना है।

फिर नमाज़ की वास्तविकता और महत्व और मनुष्य को उसकी जरूरत और नमाज़ की क्या स्थिति होनी चाहिए इन बातों का विवरण करते हुए फरमाते हुए एक अवसर पर आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि नमाज़ क्या है फरमाया कि एक विशेष दुआ है मगर लोग इसे राजाओं का टैक्स समझते हैं नादान इतना नहीं जानते कि भला ख़ुदा तआला को इन बातों की क्या आवश्यकता है उसके ग़नी ज़ात को इस बात की क्या आवश्यकता है कि इंसान दुआ तस्बीह और ला इलाहा पढ़ने में व्यस्त हो बल्कि इसमें व्यक्ति का अपना लाभ है कि वह इस रास्ते पर अपने मतलब को पहुंच जाता है। नमाज़ों के माध्यम से जो उस की आवश्यकताएं हैं पूरी होती हैं जो उस का जीवन का उद्देश्य है वह पूरा होता है, वह अपने लक्ष्य को पहुंचता है। फरमाया कि मुझे यह देख कर बहुत दुख होता है आजकल इबादत और तक्वा के धर्म से मुहब्बत नहीं हैं। इस कारण एक साधारण विषाक्त प्रभाव रस्म है इसलिए अल्लाह तआला की मुहब्बत ठंडी हो रही है और इबादत में जिस प्रकार का मज़ा आना चाहिए वह मज़ा नहीं आता। फरमाया कि, दुनिया में कोई ऐसी वस्तु नहीं भी जिसमें आन्नद और मज़ा अल्लाह तआला ने न रखी हो, प्रत्येक वस्तु में इंसान एक आन्नद अनुभव करता है फरमाया कि जिस तरह से एक मरीज एक अच्छा और सुखद स्वाद का आनंद नहीं उठा सकता है, और वह उसे कड़वा या बिल्कुल फीका समझता है। मरीज़ हैं इन के मुंह बद मज़ा हो जाते हैं और जीभ सुखी हो जाती है, तो उन्हें किसी चीज़ का मज़ा नहीं आता। अक्सर रोगियों से हम यही देखते हैं फरमाया, कि इसी प्रकार जो लोग अल्लाह तआला की इबादत में आन्नद और मज़ा नहीं पाते उनको अपनी बीमारी के बारे में चिंता करनी चाहिए। जिन्हें आन्नद नहीं आता नमाज़ में इसका मतलब है वह भी बीमार हैं क्योंकि जैसा कि मैंने अभी कहा है दुनिया में कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिस में ख़ुदा तआला ने कोई न कोई आन्नद न रखा हो। अल्लाह तआला ने मानवजाति को इबादत करने के लिए बनाया, फिर इस क्या कारण है कि इस इबादत में इसके लिए आन्नद और मज़ा न हो। आन्नद और मज़ा तो हैं लेकिन इस से लाभ उठाने वाला भी तो कोई चाहिए। अल्लाह तआला फरमाता है कि

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ

(अज़्ज़ारियात: 51)

अब इंसान जब इबादत के लिए ही पैदा हुआ है तो तो यह आवश्यक है कि इबादत में आन्नद और मज़ा भी बहुत अधिक रखा हो। इबादत में उन्नत मज़ा और आन्नद भी होना चाहिए। अन्यथा, अल्लाह तआला ने केवल पैदा किया और इस का कोई उद्देश्य नहीं है या इसका आन्नद नहीं मिल रहा तो किस प्रकार इंसान वह काम कर सकता है। फरमाया "इस बात को हम अपने दैनिक अवलोकन और अनुभव से समझ सकते हैं।" उदाहरण के लिए, अनाज और सभी भोजन और पौष्टिक चीजें मनुष्य के लिए पैदा होई हैं। अगर सभी खाद्य पदार्थ मनुष्यों के लिए पैदा होते हैं, तो क्या उन में वह एक आनंद और मज़ा नहीं पाता है क्या इस स्वाद और मज़ा और अनुभव के लिए के लिए उसके मुंह में जीभ नहीं है। क्या वे सुन्दर चीज़ों को देख कर पौधे हों या पत्थर हों फल हों पहाड़ हैं सुन्दर चीज़ें हों हैवान हों या इंसान आन्नद नहीं पाता और भी इस बात के लिए आवश्यक है कि इबादत में आन्नद नहीं है।इस`क आगे आप फरमाते हैं कि अल्लाह तआला फरमाता है कि हम ने औरत और मर्द को जोड़ा पैदा किया है औऱ मर्द को रग़बत दी है अब इस में ज़बरदस्ती नहीं की है बल्कि एक आन्नद भी बताया है अगर केवल औलाद का पैदा करना ही उद्देश्य होता तो लक्ष्य पूरा न हो सकता था। आप फऱमाते हैं कि ख़ूब समझ लो कि इबादत भी कोई बोझ और टैक्स नहीं है उसमें भी एक रमणीयता और आन्नद है और यह आन्नद और मज़ा दुनिया के सभी सुख और सभी आन्नदों से बढ़ कर और उच्च है फरमाते हैं कि जैसे एक मरीज़ किसी एक स्वादिष्ट अच्छे स्वाद वाले भोजन से वंचित है, उसी तरह हां, उसी तरह वह हतभागा व्यक्ति है जो इबादत का आनंद नहीं ले पाता है, जो अल्लाह तआाल की इबादत में आन्नद नहीं पाता। अत: यह मनुष्य की कमज़ोरी है और नमाज़ों की ओर ध्यान नहीं देना है और अल्लाह तआला के फज़ल से वंचित रहना है कि नमाज़ में आन्नद नहीं आता। अत: हम में से जो भी ऐसे हैं उन्हें इसके बारे में चिंता करनी चाहिए।

फिर वास्तिवक नमाज़ किस प्रकार की होना चाहिए इस बात को स्पष्ट करते हुए आप फरमाते हैं कि याद रखो कि यह ऐसी नमाज़ है कि इस से दुनिया भी संवर जाती है और धर्म भी लेकिन अधिकांश लोग जो नमाज़ पढ़ते हैं नमाज़ उन पर लानत(धिक्कार) भेजती है जैसे कि अल्लाह तआला फरमाता है कि

فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ

(अल्माऊन 5-6)अर्थात धिक्कार है उन नमाज़ियों पर जो नमाज़ की वास्तविकता से ही अनजान हैं। फरमाया कि नमाज़ तो वह चीज़ है कि इंसान इसके पढ़ने से प्रत्येक तरह की कदाचार और अभद्रता से बचाया जाता है इस तरह नमाज़ पढ़ना मनुष्य के अपने अधिकार में नहीं होती और यह तरीका ख़ुदा तआला की मदद और सहायता के बिना नहीं मिल सकता और जब तक मनुष्य दुआओं में न लगा रहे इस प्रकार की विनय और विनम्रता पैदा नहीं हो सकती। नमाज़ पढ़ने के लिए इस स्थान को पाना जहां मनुष्य को सब बुराइयों से बचाए एक कोशिश की जरूरत है अल्लाह

तआला की कृपा प्राप्त करने की ज़रूरत है इस के लिए विनम्रता और विनय की आवश्यकता है इसलिए चाहिए कि तुम्हारा दिन और तुम्हारी रात यहां तक कि कोई क्षण खाली नहीं होना चाहिए। अत: नमाज़ का आन्नद और मज़ा पाने के लिए अल्लाह तआला की कृपा प्राप्त करने की ज़रूरत है और अल्लाह तआला की कृपा मांगने के लिए फिर उसी के आगे झुकने की ज़रूरत है और चलते फिरते भी इसका ज़िक्र करने की ज़रूरत है और विनम्रता मांगने की ज़रूरत है। यदि यह स्थिति इंसान पैदा करे तो फिर नमाज़ों में भी मज़ा आता है ।

फिर नमाज़ में आन्नद ना आने का कारण और उसका इलाज बताते हुए आप फरमाते हैं कि मैं देखता हूँ कि लोग नमाज़ में लापरवाह और सुस्त इसलिए होते हैं कि उन्हें इस आन्नद और मज़ा से सूचना नहीं जो अल्लाह तआला ने नमाज़ के अंदर रखी है और बड़ा भारी कारण इस का यही है । शहरों और गांवों में तो और भी सुस्ती और लापरवाही होती है जो आबादियों में रहने वाले लोग हैं अधिक व्यस्त हैं उनमें और भी अधिक सुस्त हो जाते हैं अपने कार्यों की वजह से। फरमाया कि यहां तक कि सौ और पचासवां भाग भी पूरी तत्परता और सच्ची मुहब्बत से अपने मौला के सामने सिर नहीं झुकाता। फिर सवाल पैदा होता है कि क्यों उन्हें इस आन्नद की सूचना नहीं और न कभी उन्होंने कभी इस आन्नद को चखा। अन्य धर्मों में ऐसी कोई आज्ञा नहीं है, जो अन्य धर्म हैं, उन में ऐसे नियमित रूप से इबादत करने के आदेश नहीं हैं। फरमाया कि कभी-कभी ऐसा होता है कि हम अपने कार्यों में व्यस्त होते हैं और मोअज़्ज़िन आज़ान दे देता है, और वे सुनना भी नहीं चाहते क्योंकि उनके दिल दुखते हैं । ये लोग बहुत दया के योग्य हैं। आज़ान हो गई और आज़ान पर कान नहीं धरा या नमाज़ का समय हो गया इस की तरफ ध्यान नहीं दिया फरमाया कि यह लोग बहुत अधिक रहम के योग्य हैं कुछ लोग हां मज्लिस में बैठे फरमाया कि यहां भी ऐसे लोग हैं कि इन की दुकानें देखो तो मस्जिदों के नीचे हैं परन्तु कभी जाकर खड़े भी नहीं होते अर्थात नमाज़ के लिए नहीं जाते फरमाया अत: मैं यह कहना चाहता हूं कि ख़ुदा तआला से बहुत विनय और विनम्रता से यह दुआ मांगनी चाहिए कि जिस प्रकार फलों और चाज़ों की विभिन्न प्रकार के आन्नद पैदा किए हैं नमाज़ और इबादत का भी एक बार मज़ा चखा दे। आप फरमाते हैं कि खाया हुआ याद रहता है देखो अगर कोई व्यक्ति किसी ख़बसूरत को एक आन्नद के साथ देखता है तो वह उसे ख़ूब याद रखता है और फिर अगर किसा बुरी शक्ल वाले और करूप को देखता है तो उस की सारी शक्ल साक्षात मुर्त रूप होकर सामने आ जाती है। हां अगर कोई संबन्ध न हो तो कोई अन्तर नहीं पड़ता उसे कुछ याद नहीं रहता। फरमाया इस प्रकार नमाज़ न पढ़ने वालों के निकट नमाज़ एक टैक्स है के बिना किसी कारण सुबह उठ कर सर्दी में वज़ू कर के ख़ूब आराम को छोड़ कर किसी प्रकार के आराम को छोड़ कर फिर पढ़नी पड़ती है। फरमाया कि वास्तविक बात यह है कि इसे बाज़ारी है वह इस को समझ नहीं सकता उस आन्नद और मज़ा से जो नमाज़ में है इस को सूचना ही नहीं। उस को पता ही नहीं कि नमाज़ में क्या आन्नद और मज़ा है। फरमाया कि फिर नमाज़ में आन्नद कैसे प्राप्त हो। आप फरमाते हैं कि मैं देखता हूं कि एक शराबी और नशा करने वाले इंसान को जब शराब में आन्नद नहीं आता तो एक के बाद एक प्याले पीता जाता है यहीं तक कि उस को एक प्रकार का आन्नद आ जाता है। बुद्धिमान और अक्ल वाले इंसान इस से लाभ उठ सकते हैं।और वह यह कि नमाज़ पर निरन्तरता करे जब तक मज़ा न आ जाए नमाजें पढ़ता चला जाए नमाज़ें पढ़ता जाए और अल्लाह तआला से दुआ करता जाए। कि हे अल्लाह मुझे नमाज़ में वह आन्नद और मज़ा दे दे जो अन्य चीज़ों में तूने दिया हुआ है। फरमाया निरन्तरता करे और पढ़ता चला जाए यहां तक कि उसे नमाज़ में आन्नद आ जाए जैसे शराबी के दिमाग़ में एक आन्नद होता है जिस को प्राप्त करना उस का उद्देश्य होता है इसी प्रकार दिमाग़ में औऱ सारी ताकतों का उद्देश्य नमाज़ में आन्नद का प्राप्त करना हो। सारी शक्तियां इस ओर लगा दे कि मैंने नमाज़ में आन्नद प्राप्त करना है। नमाज़ का मज़ा उठाना है। फरमाया फिर एक श्रद्धा और जोश के साथ कम से कम उस नशा करने वाले के वेदना और व्याकुलता के समान ही एक दुआ पैदा हो कि वह आन्नद प्राप्त हो आप फरमाते हैं कि अगर यह दुआ पैदा हो एक व्याकुलता पैदा हो जोश पैदा है तो फरमाया इस आन्नद के प्राप्त करने के लिए मैं कहता हूं कि अवश्य ही वह आन्नद प्राप्त हो जाएगा। फिर आप फरमाते हैं कि नमाज़ पढ़ते समय इन लाभों को भी समाने रखो कि जो उसे प्राप्त होते हैं और उपकार सामने हो। اِنَّ الۡحَسَنٰتِ یُذۡهِبۡنَ السَّیِّاٰتِ (हूद 115)अल्लाह तआला फरमाता है कि नेकिया बुराइयों को समाप्त कर देती हैं अत: इन नेकियों को और उपकारों को दिल में रख कर दुआ करे कि वह नमाज़ जो सिद्दीकों और मुहिसनों की है वह नसीब करे। यह जो फरमाया कि اِنَّ الۡحَسَنٰتِ یُذۡهِبۡنَ السَّیِّاٰتِ (हूद 115) अर्थात नेकिया या नमाज़ बुराइयों को दूर करती है। या दूसरे स्थान पर फरमाया नमाज़ निर्लज्जता और बुराइयों से बचाती है। और हम देखते हैं कि कुछ लोग बावजूद नमाज़ पढ़ने के फिर बुराइयां करते हैं इस का उत्तर हो कि वह नमाज़ें पढ़ते हैं परन्तु न रूह और सच्चाई के साथ। इन की नमाज़ों में रूह कोई नहीं होती वह केवल रस्म और आदत के रूप में टक्करें मार रहे होते हैं। इन की रूह मुर्दा होती है। अल्लाह तआला ने इन का नाम हसनात (नेकियां) नहीं रखा और यहां जो हसनात का नाम रखा अस्सलात का शब्द नहीं रखा बावजूद यह कि अर्थ वही हैं। इस का कारण यह है कि ताकि नमाज़ की सुन्दरता और हुस्न की तरफ इशारा कर कि वह नमाज़ बुराइयों को दूर करती है जो अपने अन्दर एक सच्चाई की रूह रखती है और बरकतों का प्रभाव उस के अन्दर हो। वह नमाज़ अवश्य अवश्य बुराइयों को दूर करती है। फरमाया कि नमाज़ केवल उठने बैठने का नाम नहीं नमाज़ का सार और रूह वह दुआ है जो एक आन्नद और मज़ा अपने अन्दर रखती है। नमाज़ के उद्देश्य और मज़ा को प्राप्त करने की कोशिश करनी चाहिए।

इस बारे में आप फरमाते हैं-

नमाज़ की रूह और उद्देश्य को प्राप्त करने के किस प्रकार कोशिश करनी चाहिए। नमाज़ के अरकान जो हैं क्याम है रुकूअ है सिज्दा है कअदा है यह जो सारी स्थितियाँ नमाज़ में रखी गई हैं इसलिए रखी गई है कि उस लक्ष्य को हासिल किया जाए।

इस बारे में आप फरमाते हैं नमाज़ के अरकान वास्तव में आध्यात्मिक उठना तथा बैठना है। इंसान को ख़ुदा तआला के सामने खड़ा होना पड़ता है और कयाम भी ख़िदमत के शिष्टाचार में से है (जो सेवा करने वाले लोग किसी बड़े आदमी के सामने जाते हैं तो अदब से खड़े होते हैं तो कयाम जो नमाज़ में है यह शिष्टाचार की निशानी है) रुकूअ जो दूसरा हिस्सा है बतलाता है कि मानो तैयारी है कि वह आदेश के अनुपालन में कितनी गर्दन झुकाता है और सिज्दा पूर्ण शिष्टाचार और पूर्णता विनम्रता की अवस्था में ले जाता है जो इबादत का उद्देश्य है। ज़ाहिर है (जब इंसान सिज्दा करता है तो इंसान को अत्याधिक विनय तथा विनम्रता की अवस्था में ले जाता है। यही इबादत का उद्देश्य है कि मैं अल्लाह तआला के सामने सिर झुकाता हूं फरमाया ये शिष्टाचार हैं जो अल्लाह तआला ने याददहानी के रूप में निर्धारित किए हैं और शरीर को ज़ाहरी रूप से हिस्सा देने के लिए निर्धारित किए हैं।(जिस प्रकार इंसान ज़ाहरी रूप से यह शिष्टाचार कर रहा है उसी प्रकार अंदरूनी रूप से आध्यात्मिक रूप से भी रूह को भी इसी प्रकार शिष्टाचार करने चाहिए। दिल का भी इसी प्रकार कयाम रुकूअ और सिज्दा होना चाहिए।) फरमाया कि इस के अतिरिक्त भीतरी तरीका के लिए एक बाहरी तरीका भी रख दिया है अब अगर बाहरी तरीका में जो भीतरी तरीका की एक छवि है सिर्फ नकल करने वालों की तरह नकलें की जाएं सिर्फ हाथ बांध लिए और रकूअ में चले गए सिज्दा में चले गए बैठ गए अगर सिर्फ नकल मारने वालों की तरह उठक बैठक ही करनी है नकल ही मारनी है और इसे एक भारी बोझ समझ कर उतारने की कोशिश की जाए, तो तुम्हीं बताओ कि इस में क्या आन्नद और मज़ा आ सकता है और जब तक आन्नद और मज़ा न आए किसी वस्तु का मज़ा कैसे पता चल सकता है। पता ही नहीं लग सकता कि नमाज़ का मज़ा क्या है नमाज़ की वास्तविकता क्या है। फरमाया और यह उसी समय हो सकता है जब रूह भी पूर्ण विनय और विनम्रता से अल्लाह तआला के आस्ताना पर गिरे। अत: रूह को भी इसी प्रकार सिज्दा करना चाहिए और अल्लाह तआला के आगे गिरना चाहिए जिस प्रकार इंसान का जिस्म सिज्दा में चला जाता है और जो जबान बोले रूह भी वह बोले जो शब्द ज़बान से निकलने वाले हैं वह दिल से निकलने वाले शब्द हों। फरमाया कि उस समय एक आन्नद और मज़ा और सुकूल प्राप्त होता है। फरमाते हैं मैं इस को ओर अधिक विस्तार से लिखना चाहता हूं कि इंसान जितने स्तर तय कर के इंसान होता है अर्थात कहां नुत्फा बल्कि इस से भी पहले नुत्फा के अंश अर्थात विभिन्न प्रकार के खाने और उन की बनावट फिर नुत्फा के बाद विभिन्न स्तरों के बाद बच्चा फिर जवान बूढ़ा अत: इन सारी अवस्थाओं में जो उस पर गुज़रे हैं अल्लाह तआला की रबूबियत का स्वीकार करने वाला हो और वह नक्शा प्रत्येक अवस्था में इस के दिमाग़ में ख़िचा रहे और वह इस योग्य हो सकता है कि रबूबियत के मुकावला में अपनी अबूबियत को डाल दे। यह सारा इंसान जब सोचे कि मैं किस प्रकार पैदा हुआ हूं किस प्रकार विभिन्न अवस्थाओं में से बड़ा हुआ किस प्रकार मुझे अल्लाह तआला ने पाला, बड़ा किया तो तभी सहीह तरीका से और सहीह अब्द होने का हक इंसान सोच सकता है और अदा कर सकता

है। फरमाया कि सार यह है कि नमाज़ में आन्नद और मज़ा भी अबूदियत और रबूबियत के संबन्ध से पैदा होता है जब तक अपने आप को शन्य या शुन्य के समतुल्य करार देकर तुछ न समझोगे जब तक जो रबूबियत का ज़ाती तकाज़ा है न डाल दे उस का फैज़ और बरकत उस पर नहीं पड़ता। अल्लाह तआला के फैज़ से लाभ उठाना है तो पूर्ण अबूदियत पैदा करनी होगी। फरमाया कि और अगर एसा हो तो नमाज़ में उच्च स्तर का आन्नद और मज़ा प्राप्त हो सकता है जिस से बढ़ कर कोई आन्नद नहीं। इस अवस्था पर इंसान क रूह जब सम्पूर्ण रूप से नेस्ती हो जाती है तो वह ख़ुदा की ओर एक चश्मा(स्रोत) की तरह बहती है और अल्लाह के अतिरिक्त प्रत्येक दूसरी चीज़ से वह पूर्ण रूप से सम्बन्ध काट लेता है और उस समय ख़ुदा तआला की मुहब्बत उस पर गिरती है। इस जुड़ने के समय इन दो जोशों से जो ऊपर की तरफ से रबूबियत का जोश और नीचे की तरफ से अबूदियत का जोश पैदा हो रहा होता है और जब ये दोनों मिलते हैं तो आप ने फरमाया कि तब एक विशेष अवस्था पैदा होती है जिस का नान सलात है और इस विशेष अवस्था का नाम नमाज़ है जो रबूबियत और अबूदियत के मिलने से पैदा हो फरमाया कि यही सलात है जो बुराइयों को भस्म करती है इस तरह की नमाज़ हो इस प्रकार की सलात हो जो रबूदियत और अबूदियत के मिलने से पैदा होती हो। फरमाया अत: यही वह सलात है जो बुराइयों को समाप्त करती है इस तरह की नमाज़ ही बुराइयों को समाप्त करती है तो फिर बुराइयां समाप्त होती हैं इन को जला देती हैं और अपने स्थान पर एक नूर और चमक छोड़ देती है जो सालिक और रास्ता के ख़तरों के समय कठिनाइयों के समय एक प्रकाशित शमा का काम देती है और एक रोशनी का काम देती है और एक टार्च का काम देती है और प्रत्येक ठोकर, पत्थरों, कांटों तथा झाड़ियों से जो इस मार्ग में होती हैं सूचित कर के बचाती है। (प्रत्येक बुराई नज़र आ जाती है) और यही वह अवस्था है कि اِنَّ الصَّلٰوۃَ تَنْھٰی عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْکَرِ (अल्अंकबूत 46) अवस्था उस पर अवतरित हो जाती है और नमाज़ बुराइयों से रोकती है और नमाज़ बुराइयों और बेहयाइयों से रोकती है ग़लत बातों से रोकती है क्योंकि इस का हाथ में नहीं इस के दिल में रोशन चिराग़ होता है।"(फरमाया यही वह अवस्था है जब कि اِنَّ الصَّلٰوۃَ تَنْھٰی عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْکَرِ (अल्अंकबूत 46) की बात उस पर पूरी होती है कि नमाज़ जो है बुराइयों और बेहयाइयों से रोकती है। ग़लत बातों से रोकती है फरमाया उस समय उस के दिल में एक रौशन चिराग़ रखा हुआ होता है) "और सह स्थिति पूर्ण विनम्रता, पूर्ण विनय और पूर्ण आज्ञाकारिता से प्राप्त होती है। फरमाया फिर गुनाह का विचार इसे क्यों आ सकता है और इंकार इस में पैदा ही नहीं हो सकता। फरमाया कि फहशा की तरफ इस की नज़र उठ ही नहीं सकती अत: एक ऐसा आन्नद और मज़ा पैदा होता है कि मैं नहीं समझ सकता कि इस को किस प्रकार वर्णन करूं। फिर इस बात को वर्णन करते हुए कि एक ग़ैरत वाला मोमिन प्रत्येक अवस्था में अल्लाह तआला के आगे ही झुकता है और झुकना चाहिए और अल्लाह तआला के ग़ैर को किसी रूप में भी अपनी आशाओं को केन्द्र नहीं बनाना चाहिए। अप फरमाते हैं फिर यह बात भी याद रखने के योग्य है कि यह नमाज़ जो अपने वास्तविक अर्थों में नमाज़ है दुआ से प्राप्त होती है यह नमाज़ भी दुआ से प्राप्त होती है। अल्लाह के अतिरिक्त किसी ओर से सवाल करना मोमिन के सम्मान के स्पष्ट विरुद्ध है क्योंकि यह स्थान दुआ का अल्लाह तआला के लिए ही है जब तक इंसान पूरे तोर पर ख़ाली हो कर अल्लाह तआला से ही दुआ न करे और उसी से न मांगे तो सच समझो कि हकीक तौर पर वह सच्चा मुसलमान और सच्चा मोमिन कहलाने के योग्य नहीं है इस्लाम की वास वास्तविकता ही यही है कि इस की सारी अंदरूनी या बैरूनी ताकतें सब की सब अल्लाह तआला के आसताना पर गिरी हुई हों जिस तरह पर एक बड़ा इंजन बहुत से पुर्ज़ों को चलाता है इस तरह जब तक इंसान अपने प्रत्येक काम और हरकत और सुकून को इस महान इंजन की ताकत के अधीन न कर ले वह क्यों कर अल्लाह तआला की उलूहियत को मानने वाला हो सकता है और अपने आप को اِنِّی وَجَّھْتُ وَجْھِیَ لِلَّذِیْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ(अल्अनआम 80) कहते समय वास्तव में हनीफ कह सकता है। जैसे् मुंह से कहता है वैसे ही इधर की तरफ ध्यान होना चाहिए फरमाया जब एसी हालत हो निसन्देह वह मुसलमान है में मोमिन है है हनीफ है लेकिन जो आदमी अल्लाह तआला के अतिरिक्त किसी ओर से सवाल करता है और उधर भी झुकता है वह याद रखे कि वह बड़ा ही बद किस्मत और वंचित है कि उस पर वह समय आ जाने वाला कि वह ज़ुबानी और नुमायश के रूप में अल्लाह तआला की तरफ न झुक सके। फरमाया कि नमाज़ छोड़ने की आदत और सुस्ती का एक कारण यह भी है क्योंकि जब व्यक्ति ग़ैर अल्लाह की तरफ झुकता है तो रूह और दिल की शक्ति उस पेड़ की तरह जिस की शाखाएं एक तरफ कर दी जाएं और उस तरफ झुककर पोषण पा लें उधर ही झुकता है। तो यह बहुत महत्वपूर्ण है। जब नमाज़ छोड़ें या कमज़ोरियों दिखाएं नमाज़ पढ़ने में सुस्ती दिखाई और अल्लाह तआला के अतिरिक्त किसी ओर तरफ अधिक झुकना शुरू कर देता है, तो आदमी दूर हटता चला जाता है, एक पेड़ की तरह, जिसकी शाखाओं को एक तरफ फेर दिया जाए तो धीरे-धीरे वे शाखाएं उसी तरफ बढ़ने लगती हैं। फरमाया और ख़ुदा तआला की तरफ से एक सख्ती और कठोरता उस के दिल में पैदा होकर उसे स्थिर और पत्थर बना देती है जैसे वे शाखाएं जो पेड़ की एक तरफ झुक रही थीं तो दूसरी ओर मुड़ नहीं सकती उसी तरह दिल और रूह दिन प्रतिदिन ख़ुदा तआला से दूर होती जाती है तो यह एक बहुत ख़तरनाक और दिल को कपकपा देने वाली बात है कि आदमी अल्लाह तआला को छोड़ कर दूसरे से सवाल करे। इसी लिए नमाज़ का प्रावधान और निरन्तरता बहुत ज़रूरी चीज़ है कि ताकि पहले वह एक मज़बूत आदत की तरह स्थापित हो और अल्लाह की तरफ लौटने का विचार हो फिर धीरे-धीरे वह समय ख़ुद आ जाता है जबकि समस्त सम्बन्ध विच्छेद की अवस्था में एक नूर और एक लज्ज़त का वारिस हो जाता है। फिर सब बातों से अलग हो जाता है कट जाता है और सिर्फ अल्लाह तआला की तरफ लौटता है तब इंसान को एक नूर मिलता है और आन्नद प्राप्त होता है। फरमाया मैं इस बात को फिर ताकीद के साथ कहता हूं कि अफसोस है कि मुझे वह शब्द नहीं मिले जिस से अल्लाह तआला के अतिरिक्त किसी ओर की तरफ झुकने की बुराई वर्णन कर सकूं और लोगों के पास जाकर मिन्नत करते और उन से मांगते हैं यह बात अल्लाह तआला की ग़ैरत को जोश में लाती है क्योंकि यह तो लोगों की नमाज़ है अत: वह इस से हटता है और इसे दूर फेंक देता है। मैं मोटे शब्दों में इस को वर्णन करता हूं यद्यपि यह बात इस तरह पर नहीं है परन्तु समझ में अच्छी तरह से आ सकती है कि जैसे एक ग़ैरत वाला मर्द क ग़ैरत बरदाशत नहीं कर सकती कि वह अपनी बीवी को किसी ओर मर्द के साथ सम्बन्ध पैदा करते हुए देख सके और जिस तरह वह मर्द ऐसी अवस्था में इस कुलटा औरत को कत्ल के योग्य समझता है बल्कि कई बार ऐसी घटनाएं हो जाती हैं ऐसा ही जोश और ग़ैरत अलूहियत का है अल्लाह तआला को बड़ी ग़ैरत है। अबूदियत और दुआ विशेष कर के उस हस्ती के मुकाबला में..... वह पसन्द नहीं करता कि किसी ओर को माबूद करार दिया जाए या पुकारा जाए। अत: ख़ूब याद रखो और फिर ख़ूब याद रखो कि अल्लाह तआला के अतिरिक्त झुकना ख़ुदा से काटता है। नमाज़ और तौहीद कुछ ही कहो क्योंकि तौहीद के अमली इकरार का नाम नमाज़ है। उस समय बे बरकती होती है जब इस में नेस्ती और विनय की रूह और हनीफ दिल न हो।

(मलफूज़ात भाग 1 पृष्ठ 166 से168 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

फिर नमाज़ में शंकाए पैदा होने की वजह बयान फरमाते हैं कई बार कहते हैं कि विभिन्न प्रकार की शंकाएं पैदा होती रहती हैं विचार आते रहते हैं फरमाया कि जिन लोगों को ख़ुदा तआला की ओर पूरा ध्यान नहीं होता इन्हीं को नमाज़ कई बहुत शंकाएं आती हैं देखो जब एक कैदी एक शासक के सामने खड़ा होता है, तो क्या उस समय उस के दिल में कोई शंका गुज़रती है। (जब एक कैदी शासक के समक्ष खड़ा होता है, तो अन्य विचार उसके दिल में नहीं आ सकता है। यही उदाहरण है) फरमाया कि कभी नहीं। (कभी उसके दिल में यह विचार नहीं आएगा) वह सम्पूर्ण रूप से हाकिम की ओर आकर्षित होता है और इस चिंता में होता है कि अभी हाकिम क्या हुक्म सुनाता है उस समय वह अपने अस्तित्व भी बिल्कुल बेख़बर होता है ऐसा ही जब ईमानदार से आदमी ख़ुदा तआला की तरफ लौटे और सच्चे दिल से उस से आसताना पर गिरे तो शैतान का क्या साहस के शंकाएं डाल सके

(मल्फूज़ात भाग 10 पृष्ठ 90-90 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

नमाज़ की हिफाज़त क्यों की जाए और नमाज़ क्यों पढ़ा जाए। क्या अल्लाह तआला को हमारी नमाज़ों की ज़रूरत है अक्सर लोगों के मन में यह भी सवाल भी

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

उठते हैं आजकल की नास्तिकता के प्रभाव की वजह से उठते रहते हैं इस बात को समझाते हुए कि अल्लाह तआला समृद्ध है और उसे हमारी नमाज़ों की आवश्यकता नहीं है, बल्कि हमें इसकी ज़रुरत है। आप फरमाते हैं

फिर यह समझना चाहिए कि नमाज़ की हिफाज़त इस लिए नहीं की जाती कि ख़ुदा तआला को इसकी आवश्यकता है। ख़ुदा तआला को हमारी नमाज़ों की कोई ज़रूरत नहीं। वह तो सारी दुनिया से समृद्ध है उस को किसी की ज़रूरत नहीं बल्कि इसका मतलब यह है कि इंसान को ज़रूरत है और यह एक रहस्य की बात है कि इंसान ख़ुद अपनी भलाई चाहता है और इसीलिए वह ख़ुदा तआला से मदद माँगता है क्योंकि यह सच्ची बात है कि इंसान का ख़ुदा तआला से संबंध हो जाना वास्तविक भलाई का प्राप्त कर लेना है ऐसे आदमी की अगर सारी दुनिया दुश्मन हो जाए है और उसकी मौत के लिए आमादा रहे तो उसका कुछ बिगाड़ नहीं सकती और ख़ुदा तआला को उस के लिए अगर लाखों करोड़ों लोगों को नष्ट करना पड़े तो कर देता है और उस एक के लिए लाखों को फना कर देता है

(मल्फूज़ात भाग 10 पृष्ठ 66 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

सहाबा किस प्रकार विजयी हुए इस का वर्णन करते हुए आप फरमाते हैं

"इख़लास जैसी और कोई तलवार दिलों को जीतने वाली नहीं है ऐसे ही मामलों से वे लोग दुनिया पर ग़ालिब आए थे केवल मौखिक बातों से कुछ भी हो नहीं सकता। फरमाया कि अब न माथे में नूर है और न अध्यात्म है और न अनुभूति का कोई हिस्सा है। (नमाज़ की अनुभूति नहीं है नमाज़ पढ़ने की वजह से जो नूर मिलता है वह नहीं है नमाज़ें भी बोझ समझी जाती हैं। फरमाया कि ख़ुदा तआला ज़ालिम नहीं है मूल बात ही यही है कि उनके दिल में ईमानदारी नहीं। सिर्फ ज़हरी कर्म हैं जो रस्म और आदतों के रूप में किए जाते हैं। अल्लाह तआला की कृपा से जमाअत में बहुत से लोग हैं जो ख़ालिस होकर नमाज़ें पढ़ने वाले हैं। यह सामान्य स्थिति है आप उस समय कि वर्णन कर रहे हैं। तो यह हमारे लिए एक सबक है और एक चेतावनी भी है, इन बातों का ख्याल रखना।) फरमाया इससे कोई यह न समझ ले कि मैं नमाज़ का तिरस्कार करता हूँ वह नमाज़ जिसका ज़िक्र कुरआन में है और वह मेराज है। भला इन नमाज़ियों से कोई पूछे तो सही कि उन्हें सूरे फातिहा के अर्थ भी आते हैं पचास पचास साल के नमाज़ी मिलेंगे लेकिन नमाज़ का मतलब और तथ्य पूछो तो अक्सर अनजान होंगे हालांकि सभी सांसारिक ज्ञान उनके अध्ययन के सामने तुछ हैं। यद्यपि सांसारिक ज्ञान के लिए तो जान तोड़ मेहनत और कोशिश की जाती है और इस तरफ से ऐसा मुंह फैरा है कि उसे जंतर-मंतर की तरह पढ़ जाते हैं (अक्सर मुसलमानों से यही अवस्था देखेंगे) फरमाया मैं तो यहां तक भी कहता हूँ कि इस बात से मत रोको कि नमाज़ में अपनी ज़बान में दुआएं करो। बेशक उर्दू में, पंजाबी में, अंग्रेज़ी में जो जिस की भाषा में हो उसी में दुआ कर ले मगर हाँ यह आवश्यक है कि ख़ुदा तआला के कलाम को इसी तरह पढ़ो। इसमें अपनी ओर से कुछ दखल मत दो। इस को इसी तरह पढ़ो और इसे समझने की कोशिश करो। इसी तरह, हदीस से प्रमाणित दुआओं को ध्यान में रखें। कुरआन और उपरोक्त दुआओं के बाद, जो चाहो ख़ुदा तआला से मांगो और अपनी इच्छानुसार जिस भाषा में चाहो मांगो। वह सभी भाषाएं जानता है सुनता है स्वीकार करता है। फरमाया अगर तुम अपनी नमाज़ों को आन्नद वाली और उत्तम बनाना चाहते हो तो ज़रूरी है कि अपनी भाषा में कुछ न कुछ दुआ करो लेकिन अक्सर यही देखा गया है कि नमाज़ें तो टक्कर मार कर पूरी कर ली जाती हैं तो लगते हैं दुआएं करने। ग़ैर अहमदियों में यही रिवाज है अक्सर मुसलमान देशों में नमाज़ जल्दी जल्दी पढ़ ली उसके बाद हाथ उठा कर दुआ करने लग गए। फरमाया कि ये दुआएं करने लग जाते हैं। फरमाया कि इससे स्पष्ट तो यही लगता है कि)नमाज़ तो एक अन्याय का टैक्स होता है अगर कुछ ईमानदारी होती है तो नमाज़ के बाद होता है यह नहीं समझते कि नमाज़ ख़ुद दुआ का नाम है जो बड़ी विनम्रता ईमानदारी और चिन्ता से मांगी जाती है। बड़े महान कर्मों की चाबी केवल नमाज़ ही है, पहला कदम ख़ुदा तआला की कृपा के दरवाज़ा खोलने का दरवाज़ा खोलने का पहला स्तर दुआ ही है। फरमाया कि नमाज़ को रस्म और आदत के रूप में पढ़ना उपयोगी नहीं बल्कि ऐसे नमाज़ियों पर तो ख़ुद अल्लाह तआला ने लअनत और हलाकत भेजी है यह कि उनकी नमाज़ स्वीकार हो। وَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ जो ख़ुद ख़ुदा तआला ने फरमाया है यह उन नमाज़ियों के बारे में है जो नमाज़ की वास्तविकता और उसके मतलब से अनजान हैं। सहाबा तो ख़ुद अरबी भाषा रखते थे और इस वास्तविकता को ख़ूब समझते थे मगर हमारे लिए यह आवश्यक है कि इसका अर्थ समझें और अपनी नमाज़ में इस तरह आन्नद पैदा करें लेकिन इन लोगों ने तो ऐसा समझ लिया है जैसे कि दूसरा नबी आ गया और जैसा कि उसने नमाज़ को रद्द कर दिया। (आप के ख़िलाफ जो लोग बातें करते हैं उनके बारे में आप कह रहे हैं जब मैं यह कहता हूँ कि अपनी भाषा में नमाज़ करो तो कहते हैं कि नई शरीयत ले आए। फरमाया देखो ख़ुदा तआला का यह मतलब नहीं है बल्कि खुद इंसान ही के इस मैं भला है कि उसे ख़ुदा तआला के समक्ष होने का अवसर दिया जाता है और उस के सामने बात रकने की इज़्ज़त दी जाती है जि से यह बहुत से कठिनाइयों से मुक्ति पा सकता है। मुझे आश्चर्य है कि कितने लोग रहते हैं, जिनका दिन बीतता है और रात गुज़रती है, लेकिन उन्हें नहीं पता कि उनका कोई खुदा भी है। याद रखो कि ऐसा आदमी आज भी हलाक हुआ और कल भी । फरमाया कि, मैं एक आवश्यक नसीहत करता हूं काश कि लोगों के दिल में पड़ जाए। देखो, उमर गुज़र रही है लापरवाही को छोड़ दो और विनय को धारण करो अकेले हो होकर ख़ुदा तआला से दुआ करो ख़ुदा ईमान को सलामत रखे और तुम पर वह सदा प्रसन्न रहे।

(मल्फूज़ात जिन्द 10 पृ्ठ 411 से413 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

एक अवसर पर नसीहत करते हुए कि वास्तविक नमाज़ क्या चीज़ है आप फरमाते हैं وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا (अल्अन्कुबूत 70) सम्पूर्ण कोशिश से उस की राह में लगे रहो अपने उद्देश्य को प्राप्त कर लोगे। (कोशिश करो, जिहाद करो फरमाया कि तौबा और इस्तिग़फार और अल्लाह तआला को पाने का माध्यम है इस ओर ध्यान देना चाहिए और अल्लाह तआला यह फरमाता है कि जो लोग हमारे मार्ग में कोशिश करते हैं उन्हें हम फिर सही रास्तों की तरफ निर्देशन भी कर देते हैं।) फरमाया कि, अल्लाह तआला को किसी से वैर नहीं आख़िर इन्हीं मुस्लमानों में से वे थे जो कुतुब और अवदाल और घ़ैस हुए। अब भी उसकी रहमत का दरवाज़ा बंद नहीं है। नर्म दिल पैदा करो नमाज़ संवार कर अदा करो। दुआएं करते रहो और हमारी शिक्षा पर चलो, हम भी दुआ करेंगे। याद रखो हमारा तरीका ठीक वही है जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और सहाबा का था आजकल फकीरो ने कई बिदअतें निकाल ली हैं यह चिल्ले और दरूद और वज़ीफे जो उन्होंने प्रचलित किए हैं हमें नापसंद हैं (बहुत सारे लोग हैं कि बताएं अमुक क्या दुआ करों विशेष दुआ क्या है विशेष प्रयास किए जाने चाहिए असली बात नमाज़ है, नमाज़ की तरफ पूरा ध्यान होना चाहिए।) फरमाया कि मूल इस्लाम का तरीका कुरआन को ध्यान से पढ़ना और जो कुछ उस पर है उस पर अमल करना और नमाज़ को ध्यान के साथ पढ़ना और दुआएं ध्यान और अल्लाह तआला की तरफ झुकते हुए करना। अत: सिर्फ नमाज़ ही एक एसी चीज़ है जो मेअराज तक पहुंचा देती है। यह है तो सब कुछ है

(मल्फूज़ात जिलद 10 पृष्ठ 107 प्रकाशन 1985ई यू. के)

और मेअराज तक पहुंचा देने वाली वह नमाज़ है कि जो अल्लाह तआला के सामने खड़े होने वाले के दिल को पिघला दे।

फिरफर्ज़ नमाज़ो के साथ तहज्जुद की नमाज़ पर भी आप ने ज़ोर दिया और अंसारुल्लाह को तो विशेष रूप इस का ध्यान रखना चाहिए। आप फरमाते हैं

यदि इस जीवन के समस्त संसाधन अगर दुनियावी कामों के लिए गुज़र गए तो आख़िरत के लिए क्या जमा किया। अगर सारी साँसें और सारी उम्र सांसारिक कार्यों के लिए गुज़ार दी तो भविष्य के लिए क्या संग्रह किया। फरमाया कि तहज्जुद में विशेष रूप से उठो और आन्नद और शौक से अदा करो। मध्य नमाज़ों में नौकरी के कारण परीक्षा आ जाता है अर्थात आगे पीछे भी हो जाती हैं कई बार ऐसी भी परीक्षा आ जाती है कि कज़ा भी हो जाती हैं फरमाया कि राज़िक अल्लाह तआला है नमाज़ अपने समय पर अदा करनी चाहिए ज़ोहर व अस्र कभी कभी इकट्ठे सकती

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

है अल्लाह तआला जानता था कि कमज़ोर लोग होंगे इसलिए यह गुंजाइश रख दी मगर यह क्षमता तीन नमाज़ों में इकट्ठा करने में नहीं की जा सकती, जबकि नौकरी और दूसरे कई मामलों में लोग सज़ा पाते हैं और अधिकारियों से सज़ा पाते हैं तो यदि अल्लाह तआला के लिए कष्ट उठाएं तो क्या अच्छी बात है?

(मल्फ़ूज़ात जिलद 1 पृष्ठ 6 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

अगर हम सांसारिक कार्यों में भी कष्ट उठा रहे होते हैं तो अगर नमाज़ के लिए फर्ज़ पूरा करने के लिए अल्लाह तआला के आदेशों पर चलने के लिए थोड़ा सा कष्ट उठाओ तो क्या हर्ज है।) आप फरमाते हैं कि यह अल्लाह तआला का कमाल फज़ल है कि उसने पूर्ण और सम्पूर्ण विश्वास की राह हमें अपने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बिना किसी परिश्रम और मेहनत के दिखाई है।(बिना किसी मेहनत के हमें तरीका दिखा दिया) इस युग में आप को दिखाए गए कई संसार अभी भी गायब हैं ईश्वर की स्वीकृति के कारण सर्वशक्तिमान ने सर्वशक्तिमान को मार्ग दिखाया अत: ख़ुदा तआला के अनुग्रह और आशीर्वाद का शुक्र करो और वह शुक्र यही है कि सच्चे दिल से उनके अच्छे कर्म करो जो पूर्ण विश्वासों के बाद दूसरे भाग में आते हैं और अपनी व्यवहारिक स्थिति से मदद लेकर दुआ मांगो कि वे इन पूर्ण विश्वासों पर दृढ़ रहें और सत कर्मों की तौफीक प्रदान करे करे।इबादत के हिस्सा में रोज़ा नमाज़ और जकात आदि शामिल हैं। अब सोचो कि यह नमाज़ ही है यह दुनिया में आई है, लेकिन दुनिया से नहीं आई। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया: قُـرَّةُ عَيْـنِيْ فِي الصَّلٰـوة

(मल्फ़ूज़ात जिलद 1 पृष्ठ 149-150 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस बात को स्पष्ट फरमाते हुए कि वास्तविक तौहीद किस प्रकार पूरी हो सकती है फरमाया

तौहीद तब ही पूरी होती है सम्पूर्ण मुरादों को देने वाला सभी बामीरियों को दूर करने वाला और भरोसा वही एक वाहिद हस्ती है। ला इलाहा इल्लल्लाह के अर्थ यही हैं। सुफियों ने इस में इलाह ेक शब्द से महबूब मक्सूद औ माबूद अभिप्राय लिया है फरमाया बेशक असल और सच इसी प्रकार है जब तक इंसान पूर्ण रूप से तौहीद पर चलने वाला नहीं होता उसमें इस्लाम का प्यार और मुहब्बत स्थापित नहीं होती और फिर मैं वास्तविक बात का उल्लेख करके कहता हूँ कि नमाज़ की आन्नद और मज़ा उसे प्राप्त नहीं हो सकता। भरोसा इसी बात पर है कि जब तक बुरे इरादे अशुद्ध और गंदी परियोजना भस्म न हो, अंहकार और शेखी दूर होकर विनय को घारण न करे ख़ुदा का सच्चा बन्दा नहीं कहला सकता। और पूर्ण अबूदियत को सिखाने के लिए बेहतीरन मुअल्लिम और माध्यम नमाज़ ही है फरमाया मैं फिर तुम्हें बतालाता हूं कि अगर ख़ुदा तआला से सच्चा सम्बंध और हकीकी जोड़ हो तो नमाज़ के पाबन्द हो जाओ और एसे पाबन्द हो जाओ कि तुम्हारा जिस्म न केवल तुम्हारी रूह के इरादे सब के सब पूर्ण रूप से नमाज़ के लिए हो जाए।

(मलुफूज़ात भाग 1 जिल्द पृष्ठ 169-170 प्रकाशन1985 ई)

अल्लाह तआला हमारे सब को वास्तविक तौहीद पर स्थापित होने अपनी नमाज़ों की हिफाज़त करने की तौफीक प्रदान करे और ख़ुदा तआला के अतिरिक्त किसी को अपना माबूद बनाने के बजाय, हम हमेशा ख़ुदा तआला को असली माबूद अपास्य बनाने वाले हों

अन्सारुल्लाह का इज्तिमा जहां हो रहा है वहां मुझे पता चला है कि शायद मग़िरब और इशा की नमाज़ें पढ़ने का इन्तज़ाम नहीं होगा क्योंकि शाम को एक निर्धारित समय के बाद उन्होंने वह स्थान छोड़ना है। शायद हाल ख़ाली करना है यदि यह सही है तो प्रशासन को वहाँ एसा प्रबंधन करना चाहिए कि दूसरी जगह पर जमाअत के साथ नमाज़ का प्रबंध हो सके जहां भी ले के जाना है और भविष्य में अंसारुल्लाह को भी चाहिए कि अपने इज्तिमा एसे स्थानों पर आयोजित करें जहां पांचों समय नमाज़ की भी व्यवस्था हो सके अल्लाह तआला इन का इज्तिमा सफल करे और हमें वास्तविक बन्दा बनाए।

☆ ☆ ☆

संशोधन

ख़ुत्बा जुम्अ: दिनांक 1 सितम्बर 2017 ई जो अख़बार बदर के संख्या नम्बर 5 अक्तूबर 2017 ई में प्रकाशित हुआ है इस के पृष्ठ 5 कालम 2 ऊपर से10 वीं लाइन में जलसा सालाना के बारे में एक मेहमान ने अपनी अभिव्यक्ति में "चालीस लाख की भीड़" लिखा है। कृपया कर के इस " चालीस हज़ार" कर लें। धन्यवाद।

पृष्ठ 1 का शेष

स्वभाव, संयमी और सत्य बोलने वाला समझता है। अत: जब मुर्शिद (पथ-प्रदर्शक) की यह दशा हो कि सैकड़ों झूठी भविष्यवाणियां अपनी ओर से बना कर मुरीदों के सम्मुख हाथ जोड़ता है कि मेरे लिए झूठ बोलो और किसी प्रकार झूठ बोकर मुझे वली बना दो। उसे उसके मुरीद एवं अनुयायी सदाचारी और अच्छा व्यक्ति क्योंकर कह सकते हैं और क्योंकर तन-मन से उसकी सेवा कर सकते हैं। उसे तो एक शैतान कहेंगे और उससे खिन्न हो जाएंगे और मैं तो ऐसे अनुयायी पर ला'नत भेजता हूं जो मेरी ओर झूठे चमत्कार सम्बद्ध करे तथा ऐसा मुर्शिद भी ला'नती है जो झूठे चमत्कार बनाए।

84. चौरासीवां निशान - 5 अगस्त 1906 ई. को एक बार मेरे शरीर का नीचे का आधा भाग सुन्न हो गया और एक पग भी चलने की शक्ति न रही और चूंकि मैंने यूनानी चिकित्सा-पद्धति की पुस्तकों का एक-एक पाठ पढ़ा था इसलिए मुझे विचार आया कि ये पक्षाघात के लक्षण हैं, इसके साथ ही बहुत दर्द था, हृदय में घबराहट थी कि करवट बदलना कठिन था। रात्रि के समय जब मैं बहुत कष्ट में था तो मुझे शत्रुओं की गालियों का विचार आया परन्तु केवल धर्म के लिए न किसी अन्य कार्य के लिए। अत: मैंने ख़ुदा के दरबार में दुआ की कि मृत्यु तो एक अनिवार्य बात है परन्तु तू जानता है कि ऐसी मृत्यु और कुसमय मृत्यु में शत्रुओं की गालियां हैं। तब मुझे थोड़ी सी ऊंच के साथ यह इल्हाम हुआ -

اِنَّ اللّٰہ علٰی کلّ شیئٍ قدیر۔ اِنّ اللّٰہ لا یخزی المؤمنین۔

अर्थात् ख़ुदा प्रत्येक वस्तु पर समर्थ है और ख़ुदा मोमिनों को अपमानित नहीं किया करता। अत: उसी दयालु ख़ुदा की मुझे सौगंध है जिसके हाथ में मेरे प्राण हैं, जो इस समय भी देख रहा है कि मैं उस पर झूठ घड़ता हूं या सच बोलता हूं कि इस इल्हाम के साथ ही कदाचित आधे घंटे तक नींद आ गई फिर सहसा जब आंख खुली तो मैंने देखा कि रोग का कोई नामोनिशान नहीं रहा। समस्त लोग सोए हुए थे और मैं उठा और आज़माने के लिए चलना आरंभ किया तो सिद्ध हुआ कि मैं बिल्कुल स्वस्थ हूं। तब मुझे अपने सामर्थ्यवान ख़ुदा की महान शक्ति को देखकर रोना आया कि हमारा ख़ुदा कैसा सामर्थ्यवान है और हम कैसे सौभाग्यशाली हैं कि उसकी वाणी अर्थात् पवित्र क़ुर्आन पर ईमान लाए और उसके रसूल का अनुसरण किया और कितने दुर्भाग्यशाली वे लोग हैं जो इस चमत्कारों से परिपूर्ण ख़ुदा पर ईमान नहीं लाए।

(हक़ीक़तुल वह्यी, पृष्ठ 115 -118, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 22, पृष्ठ 243-246)

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ

(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वह कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बद्ध कर देता तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह उसकी जान की शिरा काट देते।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे अधिकतर उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित की गई है। किताब प्राप्त करने के इच्छुक दोस्त पोस्ट कार्ड/ मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**

Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186

Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab

For On-line Visit :www.alislam.org/urdu/library/57.html

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का दौरा जर्मनी, अप्रैल 2017 ई. (भाग -16)

☆ हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ की राष्ट्रीय मज्लिसे आमला (कार्यकारिणी) स्थानीय और क्षेत्रीय अमीरों और सभी जमाअत के सदरों के साथ मीटिंग

चन्दा कोई टैक्स नहीं है आवश्यक नहीं है कि हमें इसे लेना होगा लेकिन अपनी आय को छिपाया मत करो वरना इस में बरकत ख़त्म हो जाती है। मज्लिस कार्यकारिणी के जितने भी सदस्य हैं, ख़ुद्दामुल अहमदिया के, अंसारुल्लाह के जमाअत के आमला के सदस्य वक्फ आरज़ी ख़ुद करें। आपकी राष्ट्रीय आमला के सदस्य हैं कि उन्हें अस्थायी तौर पर वक्फ किया जाना चाहिए, वे केवल बैठने के लिए नहीं हैं। पहले घर से काम शुरू करें और फिर लोगों में भी तहरीक होगी।

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

23 अप्रैल 2017 (दिन रविवार) (शेष....)

राष्ट्रीय मज्लिसे आमला (कार्यकारिणी) स्थानीय और क्षेत्रीय अमीरों और सभी जमाअत के सदरों के साथ मीटिंग

सैक्रेटरी वसाया

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: कि इसके अलावा, लजना की तजनीद 13 हज़ार है यदि बीस वर्ष की लड़कियों को उनमें से निकालते हैं, शेष सात हज़ार बनती है। इस प्रकार, कुल मिला कर अधिक से अधिक 18 हज़ार की संख्या बन रही है, जबकि सैक्रेटरी साहिब ने जो मुझे रिपोर्ट दी है, इस के हिसाब से 29 हज़ार बना रही है। या तो जमाअत का निज़ाम इतना सक्रिय है कि ज़ैली-संगठनों को पता ही नहीं लग रहा कि यह लोग कहां से ला रहे हैं। हलांकि ज़ैली संगठनों की व्यवस्था की प्रणाली जमाअत से अधिक सक्रिय होनी चाहिए।

* सदर ख़ुद्दामुल अहमदिया ने कहा कि हम ने राष्ट्रीय आमला को बताया था कि हमारी तजनीद प्रत्येक महीने अप डेट हो रही है। इस दृष्टि से देखने वाली बात यह है कि जमाअत की तजनीद ठीक है या नहीं, क्योंकि हम प्रत्येक ख़ादिम तक पहुंचते हैं और हमारा बजट हर ख़ादिम के ऊपर बनता है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: क्या आप ने AIMS का डेटा इन लोगों के साथ आदान-प्रदान किया हैं? आख़िर जो AIMS कार्ड सत्यापित हो कर आते हैं वे ज़ैली तमज़ीमों की तरफ से ही आते होंगे? इस पर बताया गया कि AIMS कार्डों का सत्यापन सदर जमाअत की तरफ से होती है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: आपके पास जो रिपोर्ट आती है इस पर ख़ुद्दामुल अहमदिया के हस्ताक्षर भी होने चाहिए। अगर अंसार या लजना है तो संबंधित ज़ैली-संगठन भी इसकी पुष्टि करने के लिए ज़िम्मेदार है। महिलाओं और पुरुषों दोनों की तरफ से मुझे रिपोर्ट मिली है कि कुछ संदिग्ध लोग भी हैं । कुछ मामलों में सदरों ने बिना देखे एसे लोगों की पुष्टि की है जो ग़ैर अहमदी हैं या जमाअत से निष्कासित कर दिया गया था। यही कारण है कि मैं किसी एक प्रणाली पर भरोसा नहीं करता। विभिन्न स्रोतों से पुष्टि के लिए विभिन्न प्रणालियां बनाई गई हैं ताकि पुष्टि हो सके। वहां केंद्र, पाकिस्तान में यही होता है। नाज़िर अमूर आम्मा की रिपोर्ट को भी सत्यापित नहीं किया जाता जब तक कि सदर फैसले की पुष्टि नहीं करता है या यदि सदर अंसारुल्लाह ने यह पुष्टि नहीं की है कि वह अंसार में हैं जब हम नाज़िरों पर भरोसा नहीं करते हैं तो हम सदरों पर कैसे कर लें? इसलिए, इस प्रणाली को ठीक करने की आवश्यकता है। अब आपका काम है कि सदरअंसारुल्लाह, सदर ख़ुद्दामुल अहमदिया और सदर लजना के साथ सूची को सत्यापित करना है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: अतीत में सदरों के बारे में एक दो रिपोर्टें हैं, निकाहों के मामलों में ग़लत सत्यापित कर दिया और इस पर फिर उन्हें सज़ा भी हुई। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "केवल दफतर में कुर्सी पर बैठ कर अपने आपको जनरल सैक्रेटरी के रूप में समझना कि मैं चौधरी बन गया हूं।" यह कोई तरीका नहीं है

तसनीफ

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर तसनीफ विभाग के प्रभारी ने अपनी रिपोर्ट पेश करते हुए अर्ज़ किया कि इस साल में दो पुस्तकें छपी हैं। एक प्रिंट होकर आ गई है और एक आने वाली है दो किताबों का लेआऊट बन रहा है इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया" ठीक है।"

अतिरिक्त सैक्रेटरी मॉल

अतिरिक्त सैक्रेटरी मॉल ने अपने विभाग की रिपोर्ट पेश करते हुए कहा कि बजट तैयार करने के लिए सभी सैक्रेटरियों से सम्पर्क किया जाता है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: सैक्रेटरी माल को चाहिए कि बजट बनाने के दौरान सभी के घर तक पहुंचने तक पहुंचें। हुज़ूर अनवर अय्यद-हुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: असली बाततो माली कुरबानी का महत्तव है जो आपको बतानी चाहिए। सैक्रेटरी तरबियत का भी काम है कि लोगों को वित्तीय कुरबानी के महत्व का एहसास हो जाए तो बाकी सब ठीक हो जाता है

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर सैक्रेटरी माल ने बताया कि हमारे पास एक व्यक्तिगत बजट मूल्यांकन फॉर्म है

*हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर सैक्रेटरी माल ने बताया कि यहाँ जर्मनी में minimum wages (884) यूरो है। या कमी महसूस हो रही है कि लोग वास्तविक आय पर बजट नहीं लिखवाते। अब हम Plan बना रहे हैं कि जमाअत के लोगों को बताया जाए कि अनिवार्य चन्दे वास्तविक आय पर लिखवाने क्यों आवश्यक हैं? अगली आमला की मीटिंग में हम इस योजना को पेश करेंगे। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: जो अपनी वित्तीय स्थिति की वजह से चंदे नहीं दे सकते वे बता दें कि हम नहीं दे सकते। लेकिन यह कहना कि हमारी आय इतनी है, यह ग़लत है। ऐसी आय में तो कोई बरकत नहीं है। सैक्रेटरी प्रशिक्षण भी और सैक्रेटरी माल भी ध्यान दिलाएं और सदर ख़ुद भी निजी तौर पर यह ध्यान दिलाएं। चन्दा कोई टैक्स नहीं है आवश्यक नहीं है कि हमें इसे लेना होगा लेकिन अपनी आय को छिपाया मत करो वरना इस में बरकत ख़त्म हो जाती है। यदि नहीं देना तो हमें बता दें कि हम नहीं दे सकते या हम जितना दे रहे हैं उससे अधिक नहीं दे सकते। अच्छा है कि मुझ से लिख कर इजाज़त ले लें। मुझे बहुत से ख़त आते हैं जर्मनी से भी आते हैं कि हम इतना चन्दानहीं दे सकते या हमारा चन्दा कम कर दें।

सैक्रेटरी शिक्षा

* सैक्रेटरी शिक्षा ने अपने विभाग की रिपोर्ट पेश करते हुए बताया कि हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ की आज्ञा के अनुसार अगले पांच से दस साल के स्टूडेंट्स को गाईड करने की योजना बनाई जा रही है। इस के लिए योजना बना ली गई है और अमीर साहिब को भिजवाया गया था जिस पर अमीर साहिब ने कुछ परामर्श दिए हैं और तदनुसार हम काम कर रहे हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: अक्सर लड़के मुझे मिल रहे हैं जो कहते हैं कि हम ने दसवीं कक्षा करके पढ़ाई छोड़ दी है और काम कर रहे हैं या taxi चला रहे हैं या पिता के साथ काम कर रहे हैं। लेकिन लड़कियां पढ़ रही हैं। फिर रिश्ता नाता वाले कहते हैं कि रिश्ते मैच (Match) नहीं होते क्योंकि लड़कों की पढ़ाई की तरफ ध्यान कम है और लड़कियां पढ़ रही हैं। जब लड़कियां पढ़ जाती हैं बजाय इसके कि वह यह देखें कि हम ने धर्म को दुनिया पर

प्राथमिकता रखते हुए अहमदियों में ही रिश्ते करने हैं अपनी डीमानड बहुत ज्यादा बढ़ा देती हैं। हालांकि छोटी मोटी कमियां स्वीकार करके रिश्ते हो सकते हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: इसलिए ख़ुद्दामुल अहमदिया को इस लिहाज़ से भी योजना की ज़रूरत है और शिक्षा की ओर अधिक ध्यान पैदा करवाएं ताकि रिश्ता नाता की समस्या भी खत्म हो। हुज़ूर अनवर अय्यद-हुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: आप के पास पूरा डेटा होना चाहिए कि कितने छात्र हैं और वे क्या कर रहे हैं। विश्वविद्यालय के छात्र का तो डेटा होता है क्योंकि छात्र एसोसिएशन से help मिल जाती है लेकिन ज़मीनी स्तर पर स्टूडेंट्स के डेटा मौजूद नहीं होता। अपने नीचे वाले लोगों को भी संभालना आप का फर्ज़ है। शिक्षा के सैक्रेटरी सिर्फ विश्वविद्यालय के छात्रों को संभालना नहीं है। बल्कि सैक्रेटरी शिक्षा काम है कि primary से लेकर arbiture तक और फिर arbiture से university तक प्रत्येक को संभालना। उन्हें बचपन से प्रोत्साहित करें और पढ़ाई की ओर ध्यान करें। जो मां बाप अधिक पढ़े लिखे नहीं हैं उन के बच्चों को विशेष ध्यान दिलाएं। संबंधित सैक्रेटरी शिक्षा, सदर और कार्यका-रिणी वाले भी इस ओर ध्यान दें तो तो अगली नस्ल बेहतर नकलेंगी। केवल अपने हाल पर ही न सोचें बल्कि अगली नस्ल की चिंता करें। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: मैं पहले भी बता चुका हूँ कि गिलगित स्कर्दू आदि में आग़ाख़ानी लड़कियां बहुत ज्यादा पढ़ी-लिखी हैं लेकिन वे कम पढ़े लिखे लोगों से इसलिए रिश्ते कर रहे हैं कि हमारी नस्ल नष्ट न हो जाए। हमारी लड़कियों को कुरबानी देना चाहिए और लड़कों को पहले से कहीं ज्यादा पढ़ना चाहिए। पहली बात तो यह है यहाँ पढ़ने के अवसर हैं उनसे लाभ लें बजाय कि आवार गरदीं में पड़ जाएं। ख़ुद्दामुल अहमदिया और प्रशिक्षण विभाग को भी इस विषय पर ध्यान देना चाहिए कि लड़कों में जो आवार गरदी की जो आदत पड़ चुकी है इससे निपटने की कोशिश करें। लड़के लड़कियां के ख़िलाफ शिकायतें करते हैं, लड़कियां लड़कों के ख़िलाफ शिकायतें करते हैं, और धीरे धीरे यह समस्या बढ़ती जा रही हैं। अगर आप एक नियमित कार्यक्रम का प्रबंधन नहीं करते हैं, तो ये समस्याएं बढ़ जाएंगी।

सैक्रेटरी वक्फ जदीद

* हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर सैक्रेटरी वक्फ जदीद ने बताया वक्फ जदीद में शामिल होने वालों की संख्या 28 हज़ार 680 है। उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: इस संख्या में वृद्धि होनी चाहिए। विशेष रूप से इस में नए अहमदियों को जोड़ें।

अतिरिक्त सैक्रेटरी संपत्ति (एक सौ मस्जिदों की योजना)

*हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने मस्जिदों के बजट के संदर्भ में विस्तृत समीक्षा के बाद सौ मस्जिदों के बारे में अमीर साहिब जर्मनी को निर्देश देते हुए कहा कि आप ने इस परियोजना के लिए उप संगठनों से भी कर्ज़ लिया हुआ है और उनकी बहुत सारे पैसे वापस करने हैं। इस का मतलब है कि इस स्थिति में तो आप का और अधिक मस्जिदों का निर्माण रोक देना चाहिए और जो इस समय निर्माणाधीन हैं पहले उन्हें पूरा करना चाहिए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: पैसों की स्थिति का तो आप को पता है। आप की तो

कर्ज़ की पीते थे मय लेकिन समझते थे कि हां
रंग लावेगी हमारे फाका मस्ती एक दिन

वाली स्थिति बनी हुई है। सब कुछ कर्ज पर चल रहा है आपने कर्ज़ भी उतारना है इस समय आप ने एक बड़ी रकम तो केंद्र को ही अदा करनी है केन्द्र के सारे संसार में अपनी बड़ी संख्या में कई परियोजनाएं चल रही हैं। आप इतना पैर क्यों फैलाते क्यों हैं जब खर्च ही नहीं कर सकते? इतना ही करे जितना कर सकते हैं। जिन जमाअतों ने मस्जिदों के बारे में पहले कुरबानी की हुई है और एक लाख दे दिया हुआ है या पांच मिलयन या दस लाख दिए हैं। तो पहली प्राथमकिता इन्हें देनी चाहिए। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: एक preferences order बनना चाहिए कि किस किस जमाअत ने कितने कितने पैसे दिए हैं और यदि किसी विशेष कारणों से कहीं मस्जिद बना रहे हैं वे कारण पता होना चाहिए कि क्यों preference दी जा रही है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "एक पूरी सूची बनाएं कि इस समय कहां कहां आपकी मस्जिदें बन रही हैं। आपके पास वर्तमान फंड की स्थिति क्या है। आपके कर्ज़ की स्थिति क्या है? आप एक वर्ष में कितना पैसा जमा कर सकते हैं? उनके नक्शे क्या हैं? इन सभी चीजों को केंद्र में ले कर आएं अगले कुछ सालों के लिए, मैं यह सारा काम अपने हाथ में ले रहा हूं। मस्जिदों की मंज़ूरी, मस्जिदों के नक्शे, मस्जिदों के लिए धन की मंजूरी, ये सभी लंदन में आकर मंज़ूर करवाया करें। स्थानीय जमाअत को इसका अधिकार ही नहीं होगा।

* अमीर साहिब जर्मनी ने कहा कि पूर्वी जर्मनी में लेपज़िग और एरफर्ट में दो मस्जिदों का निर्माण किया गया है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर अमीर साहिब जर्मनी ने बताया कि वहाँ जमाअत न होने के बराबर है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "यदि कोई जमाअत नहीं है, तो आप वहां मस्जिद क्यों बना रहे हैं?" मैंने तो आप से नहीं कि वहाँ मस्जिदें बनाएँ और न ही आप ने मुझ से अनुमति मांगी है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: अब किसी भी ऐसी जगह मस्जिद निर्माण नहीं होगी जहां जमाअत नहीं है। उन क्षेत्रों को प्राथमिकता दी जाएगी जहां हमारी जमाअत है वहां एक मस्जिद बनाने का क्या उद्देश्य है जहां कोई जमाअत नहीं है? जैसा पैग़ामियों ने बर्लिन में एक मस्जिद बनाई हुई है, क्या आप भी केवल निशानी के लिए मस्जिदों को ऐसा करना चाहते हैं? इसलिए, पहली प्राथमिकता उसी क्षेत्र को दी जाएगी जहां बड़ी संख्या में हमारे जमाअत के सदस्य हैं। वर्तमान में, जो भी पूर्वी जर्मनी में मस्जिद बनाने की योजना है, अभी उसे रोक दें। अगली मस्जिदों का जो भी मामला है, धन की स्थिति जो भी हो और जो भी योजना हो वह मेरे पास लाएं मैं निर्णय करता हूं कि क्या करना है और यह कैसे करना है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "राष्ट्रीय आमला, स्थानीय आमला और स्थानीय प्रशासन के पास अब मस्दिजों का कोई अधिकार नहीं है। सारी जरूरत अब मेरे पास लेकर आएं और मुझे बताएं।

इसके बाद, अतिरिक्त सैक्रेटरी संपत्ति ने कहा कि धन उगाहने में एक समस्या यह है कि जिस जगह पर एक मस्जिद की योजना बनाई गई है, जब एक मस्जिद का निर्माण होता है, तो लोग यह सोचते हैं कि यह मस्जिद अब पूरी हो ही जाएगी इसलिए सुस्ती आती है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "ये समस्याएं तो होती ही हैं इसलिए उसी समय काम शुरू होगा जब लोगों ने जो वादे किए हुए हैं उन वादों का कम से कम 90 प्रतिशत का भुगतान है। वरना काम ही शुरू नहीं होगा।

इसके बाद, आमला के एक सदस्य ने कहा कि उप-संगठनों को जो टारगेट दिए जाते हैं इन में ख़ुद्दामुल अहमदिया और लजना इमाउल्लाह के टारगेट पिछले साल से बढ़ रहे हैं और 10 लाख से ज्यादा रकम आ रही हैं। लेकिन अंसारुल्लाह की कमी है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "यह तो ज़ैली तंज़ीमों की उदारता है जो वे आप लोगों को दे देते हैं। वे जिम्मेदार नहीं हैं। मस्जिदें बनाने की ज़िम्मेदार जमाअत है। मैंने तो उप-संगठनों को यह कहते हुए लक्ष्य दिया था कि आप की मदद हो जाए। अन्यथा, मस्जिदों के लिए धन इकट्ठा करने की उनकी ज़िम्मेदारी नहीं है। यह आप का कर्तव्य है कि आप ख़ुद इकट्ठा करें यदि ख़ुद्दामुल अहमदिया, लजना और अंसारुल्लाह को आज मैं कह दूं कि आप ने नहीं देना तो आप लोगों का क्या बनेगा? यह फंड इकट्ठा करना तो आप का काम है। आप दूसरों पर न डालते रहा करें। ठीक है अगर उप-संगठन आपके सहायक होते हैं लेकिन सहायक होने पर इसका मतलब यह नहीं है कि अपने सारे बोझ का मलबा उन पर डाल दो। अपने काम दूसरों पर डालने की आदत समाप्त करें। उप संगठन जितना भी दे रहे हैं वह उन की मेहरबानी है वह शुक्रिया के साथ स्वीकार करें उन का फर्ज़ नहीं है कि वह आप को ज़रूर दें। जहां जहां मस्जिदें बनानी हैं वहां धन इकट्ठा करना आपकी ज़िम्मेदारी है।

सैक्रेटरी अमुरे ख़ारजा

* इस के बाद सैक्रेटरी अमूरे ख़ारजा ने अपनी रिपोर्ट पेश करते हुए बताया कि हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के दौरे के दौरान मस्जिदों के उद्घाटन को लेकर किए जाने वाले काम के अलावा हमारे पास इस समय दो योजनाएं हैं। एक प्रेस मीडिया के साथ सम्पर्क और प्रेस कान्फ्रेंस, और इस समय प्रत्येक ज़िले में तब्लीग़ विभाग के साथ प्रेस कॉन्फ्रेंस हो रही है अब तक 65 प्रेस सम्मेलन हो चुके हैं इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "यह अच्छी बात है कि इस तरह के प्रेस सम्मेलन हो रहे हैं।" लेकिन फिर इसके बाद इस का नियमत पालन भी करें। एक दो स्थानों पर तो अच्छे सम्बन्ध हैं, लेकिन इन संबंधों का विस्तार किया जाना चाहिए।

सैक्रेटरी तालीमुल कुरआन

* इस के बाद सैक्रेटरी तालीमुल कुरआन ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला

बेनस्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर बताया कि हमने कक्षाएं शुरू की हैं और सात आठ महीनों से दौरे भी कर रहे हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर सैक्रेटरी तालीमुल कुरआन ने कहा कि इसमय 40 जमाअतों और दस स्थानीय इमारतों में नियमित कक्षाएं चल लही हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर सैक्रेटरी तालीमुल कुरआन ने कहा कि वक्फ आरज़ी के संदर्भ में कोई व्यावहारिक काम नहीं हुआ। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: इस संदर्भ में भी काम करवाएँ। मज्लिस कार्यकारिणी के जितने भी सदस्य हैं, ख़ुद्दामुल अहमदिया के, अंसारुल्लाह के जमाअत के आमला के सदस्य वक्फ आरज़ी ख़ुद करें। आपकी राष्ट्रीय आमला के सदस्य हैं कि उन्हें अस्थायी तौर पर वक्फ किया जाना चाहिए, वे केवल बैठने के लिए नहीं हैं। पहले घर से काम शुरू करें और फिर लोगों में भी तहरीक होगी। पिछले दो सालों में, कितने सदर हैं जिन्होंने वक्फ आरज़ी की है? कितने आमला के सदस्य हैं जिन्होंने वक्फ आरज़ी की है? आप लोगों ने स्वयं नहीं की तो बाकी लोग क्यों करेंगे?

सैक्रेटरी प्रकाशन

*इस के बाद सैक्रेटरी प्रकाशन ने रिपोर्ट पेश करते हुए बताया कि इस वर्ष पंद्रह किताबें छपवाई गई हैं जिस में कुरआन का (जर्मन अनुवाद), नमाज़ अनुवाद के साथ, वक्फ नौ के पाठ्यक्रम, कश्ती नूह, इस्लामी उसूल के सिद्धांत और कुछ हज़रत मसीह मूसा की किताबों का अनुवाद है।

राष्ट्रीय अमीन

* राष्ट्रीय अमीन ने कहा कि उनका काम विभिन्न विभागों को नकदी प्रदान करना होता है। और सारी जमाअत से जो ज़ेवर आता है उस का निपटान करते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर, राष्ट्रीय अमीन ने कहा कि माल विभाग की तरफ से वाउचर आते हैं, जिन के अनुसार वह अदा करते हैं।

राष्ट्रीय सैक्रेटरी उद्योग व व्यापार

*इस के बाद राष्ट्रीय सैक्रेटरी उद्योग व व्यापार ने अपने विभाग की रिपोर्ट पेश करते हुए बताया कि वह बिज़नेसमैन लोगों का डाटा अपडेट कर रहे हैं। इस के बाद एक नई निर्देशिका निकालनी है जो कि जलसा सालना पर प्रकाशित करेंगे। इसके अलावा, सूचना सेमिनार की भी योजना है।

*हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने पूछा जो नए लोग असाइलम सैकरज़ रिटर्निंग आते हैं उन्हें छोटा मोटा काम देना या प्रशिक्षण देना इस संदर्भ कोई काम कर रहे हैं या नहीं? सैक्रेटरी उद्योग और व्यापार ने कहा कि हम प्लानिंग कर रहे हैं कि स्थानीय सैक्रेटरी उद्योग के साथ मिल कर लोकल संडे बाज़ारों में लोगों को भेजा जाए। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया, "इस पर भी काम करें केवल पलानिंग ही न करते रहें।"

कॉन्टिनेंटल ऑडिटर

* इसके बाद, कॉन्टिनेंटल ऑडिटर ने रिपोर्ट पेश करते हुए कहा कि वह अंसारुल्लाह, लजना इमाउल्लाह और जमाअत की ऑडिट रिपोर्ट केन्द्र को भेज चुके हैं। उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: ठीक है।

मुहासिबा विभाग

*इस के बाद मुहासिबा ने अपने विभाग की रिपोर्ट पेश करते हुए बताया कि वह मासिक रिपोर्ट तैय्यार करते हैं जिस में आय और व्यय की रिपोर्ट शामिल होती है।

*हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर मुहासिब साहिब ने बताया कि क्षेत्र से या विभिन्न क्षेत्रों जो वाऊचरज़ आते हैं उन पर पहले क्षेत्रों के सैक्रेटरी ख़ुद हस्ताक्षर करते हैं। इसके बाद, ये वाउचर विभाग में जाते हैं जहां सैक्रेटरी माल इन पर हस्ताक्षर करते हैं। फिर, इन वाउचर पर, अमीर साबिह या मिशनरी प्रभारी हस्ताक्षर करते हैं। उसके बाद, ये वाउचर भुगतान या लेखा के लिए हमारे पास आते हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "यह अमीर साहिब को स्वंय हस्ताक्षर करने चाहिए।" सभी वाउचर पर अमीर साहिब की पुष्टि होनी चाहिए न कि नायब अमीर की।

प्रशिक्षण विभाग नौमुबाईन

*हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने पूछा कि इस साल 126 बैअतें हुई हैं और इसी तरह पिछले दो वर्षों में जो बैअतें हुई हैं उनके नौमुबाईन को main stream करने के लिए आप ने क्या कयिा है? इन में से कितनों के साथ आप का स्थायी संपर्क है? इस पर सैक्रेटरी तरबियत नौमुबाईयन ने बताया कि उनके पास महिलाओं के संपर्क हवाले से तो रिपोर्ट नहीं की, लेकिन पिछले साल से कुल पुरुषों में से 59 अरब लोगों के साथ सम्पर्क किया गया है। हमने यहां एक अरब डेस्क बनाया है, जिसके प्रभारी हफ़िज़ुल्लाह भरवाना साहिब है जो मुझे रिपोर्ट करते हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: आप को महिलाओं का भी ज्ञान होना चाहिए। आप लजना से रिपोर्ट लें कि उनमें से कितनी महिलाओं संपर्क में हैं और कितनी के साथ संपर्क नहीं हैं? यदि आपके पास कोई रिपोर्ट ही नहीं होगी तो आप उन्हें सिस्टम में कैसे जोड़ेंगे? नए बैअत करने वाले पुरुषों और महिलाओं दोनों के प्रशिक्षण की ज़िम्मेदारी आप पर है यदि आपने इन नए अहमदियों का तरबियत के लिए कोई योजना बनाई हुई है तो आपको यह योजना लजना को भी देनी चाहिए ताकि लजना भी इस प्लान पर काम कर सके। इस योजना को लागू करना तो लजना की तरफ से ही होगा लेकिन आप ने योजना देनी है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने पूछा: जिन जमाअतों में नौमुबाईन हैं वहां आप स्वयं भी दौरा करते हैं और उन से व्यक्तिगत रूप से मिलते हैं? सैक्रेटरी तरबियत नौमुबाईन ने कहा कि कुछ जमाअतों में दौरा किया है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया, "आप को अक्सर जमाअतों का दौरे करने करने चाहिए और नौमुबाईन से व्यक्तिगत रूप से मिलकर उन के साथ परिचय बढ़ाना चाहिए। नौमुबाईन के ज्ञान में होना चाहिए कि आप सैक्रेटरी तरबियत नौमुबाईन हैं ताकि जब भी उन्हें कोई समस्या हो, तो वे आपसे संपर्क कर सकते हैं। इसी प्रकार, स्थानीय स्तर पर, विभिन्न जमाअतों में, नौमुबाईन को अपने जमाअत के सैक्रेटरी का नाम पता होना चाहिए। लेकिन केवल जमाअत के सैक्रेटरी नौमुबाईन के नामों पर ही भरोसा न करें लेकिन आपको उनके साथ स्थायी संपर्क भी होना चाहिए। इसी तरह आप उन्हें बेहतर प्रशिक्षण दे पाएंगे।

*इस के बाद सैक्रेटरी तरबियत नौमुबाईन ने अर्ज़ किया कि कुछ जर्मन अहमदी लड़कियों से शादी करने के लिए बैअत करते हैं और जब तक शादी नहीं हो जाती वह संपर्क रखते हैं लेकिन शादी के बाद पीछे हट जाते हैं। क्या ऐसे लोगों को शादी की अनुमति दी जानी चाहिए ? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "कुछ मामलों में, शादी की अनुमति दी जाती है।" लेकिन यह इजाज़त मैं ख़ुद देता हूं। लेकिन आपका काम ऐसे लोगों को प्रशिक्षित करना है आप प्रशिक्षिण का काम जारी रखें बल्कि आप का ख़ुद भी उन के साथ स्थायी सम्पर्क होना चाहिए। उन्हें सूरह फातिहा और इस्लाम के बारे में बुनियादी बातें सिखाएं। इसी तरह लजना के द्वारा उस लड़की को जिस की शादी हुई है उसे भी ध्यान दिलाते रहें कि अब यह तुम्हारा फर्ज़ है तक अब उसे इस्लाम के बारे में सिखाए और उसे जमाअत का हिस्सा बनाए।

समी बसरी (श्रवण दृश्य) विभाग

*हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया कि याद रखें कि समी बसरी का विभाग कोई कार्यक्रम एयर नहीं कर सकता जब तक केंद्र से मंजूरी न हो। मैंने आप को लिखकर भी भिजवाया था। पहले केंद्र से निदेशक प्रोग्रामिंग की मंजूरी लेंगे उसके बाद ही इसे एयर कर सकते हैं चाहे उसे वेबसाइट पर देना हो या किसी और चीज़ पर देना हो। आपके पास स्वयं का कार्यक्रम प्रसारित करने का विकल्प नहीं है।

*इस के बाद श्रवण दृश्य विभाग सैक्रेटरी ने अपने विभाग की रिपोर्ट पेश करते हुए बताया कि हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ख़ुत्बा जुम्अ: जर्मन अनुवादों की sub-titling का काम करने की तौफ़ीक़ मिल रही है। इसके लिए हम एक सॉफ्टवेयर तैयार कर रहे हैं जो वर्तमान में परीक्षण के चरण में है।

* अतिरिक्त सैक्रेटरी वक्फे नौ ने कहा कि उन के ज़िम्मे वक्फे नौ की केरियर प्लानिंग और योजना का काम है। यह तीन भागों में विभाजित है। हम सातवीं कक्षा से शुरू करते हैं। फिर रियल स्कूल वारे होते हैं इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया रियल स्कूल वाले तो मैंने प्राय देखा है कि आमतौर पर पढ़ाई छोड़ बैठते हैं।" यदि आप उन्हें बेहतर मार्गदर्शन करते हैं, तो वे जमाअत के लिए अच्छी संपत्ति बन सकते हैं। इस पर अतिरिक्त सैक्रेटरी वक्फ नौ ने बताया कि इसके लिए हम एक mentor system बनाया हुआ है एक विश्वविद्यालय में पढ़ने वाला वाक्फे नौ ग्यारहवीं से लेकर तेरहवीं कक्षा तक के पांच स्टूडेंट्स को गाइड करेंगे और उनकी Personal कोचिंग करे। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "यह अच्छा है कि आप उन्हें एक टीम बनाते

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP -45/2017-2019- Vol. 2 Thursday 2 November 2017 Issue No. 44

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 300/- Per Issue: Rs. 6/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

हैं।" लेकिन मैंने यह भी देखा है कि इस तरह के ज्ञान का प्रतिशत विश्वविद्यालय में बढ़ गया है, जो विश्वविद्यालय में जाता है और एक लेख में स्नातक को स्वीकार करता है। दो साल पढ़ते हैं और फेल होते रहते हैं और फिर कहते हैं कि हम किसी और चीज में switch करना चाहते। ऐसे स्टूडेंट्स को जब mentor बनाएंगे तो जिनके वे mentor बनेंगे वह भी ऐसे ही निकलेंगे। इसलिए पहले जाँच कर लिया करें कि आप विश्वविद्यालय के लड़कों में से जो कौंसिलनग और कोचिंग की टीम बना रहे हैं वह ऐसे लड़कों की होनी चाहिए जो होशियार भी हूँ और अपने क्षेत्र में पूरी information दे सकने वाले हों। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: इसके अलावा, मैंने कह था कि बाहर से विशेष माहिर होते हैं उन`स भी साल में एक दो बार 11 वीं बारहवीं के लड़कों का सेमिनार करवा सकते हैं। आपको इसके लिए भी पैसे देने पड़ सकते हैं लेकिन कुछ ऐसे लोग हैं जो बिना मुआवजे के परामर्श के लिए तैयार हैं।

इसके बाद, अतिरिक्त सैक्रेटरी, वक्फ नौ, ने कहा कि हमारे विश्वविद्यालय के 232 वाक्फीन छात्र हैं। यही कारण है कि हम विभिन्न श्रृंखला बना रहे हैं अब तक हमने 18 श्रृंखला बना चुके हैं ताकि छात्रों को उनके नेटवर्क बन सकें और वे लेखों का जिक्र करते हुए एक-दूसरे से लाभ उठा सकते हैं।

सैक्रेटरी जायदाद

*हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर सैक्रेटरी संपत्ति ने बताया कि जमाअत की पूरे देश में इस समय 77 प्रापर्टी हैं। इन सभी प्राप्रटी के रिकॉर्ड जायदाद विभाग के पास है।

*हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया बैयतुल आफियत के बारे में मैंने सुना है कि वहाँ कुछ परिवर्तन कर रहे हैं और बड़े हॉल का विभाजन करके इस में कमरे बना रहे हैं। इस का क्या लाभ होगा ? अगर बाद में किसी समय वहाँ नमाज़ आदि की पढ़ने की अनुमति मिल जाती है तो यह जगह तो प्रयोग नहीं की जा सकती। इसके पर सैक्रेटरी संपत्ति ने बताया कि परिषद वालों का कहना था कि वहाँ एक सीमित संख्या में अनुमति मिल सकती है लेकिन आपके ग्राउंड फलाउर में में काफी अधिक जगह है। चूंकि हॉल बड़ा था इसलिए उसे छोटा किया गया है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया कि आप को चाहिए था कि वहाँ बड़े बड़े कमरे बना देते। यदि आपको बाद में फिर से इस्तेमाल करने की आवश्यकता हो तो आपको उस योजना के साथ बनाना चाहिए। यदि तीन चार हज़ार लोग जुम्अ: पढ़ने के लिए यहां आए, तो उनमें से दो हज़ारों के लगभग तो बैयतुल आफियत में शामिल हो जाऐंग। इस का प्लान करना चाहिए कि वहां कम से कम दो हज़ार आदमी आ सके।

सेक्रेटरी जायदाद ने कहा कि इसका शीर्ष भाग किराए पर है, जो एक टीवी चैनल वाले ने लिया हुआ है। लेकिन यह 18 महीने का अनुबंध है जो समाप्त हो सकता है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "ठीक है, यह समाप्त हो सकता है।" हमने इस इमारत को किराए पर देने के लिए तो नहीं ली थी।

इस पर अमीर साहिब जर्मनी ने कहा कि परिषद ने कहा था कि यहां पर बहुत बड़ी सभा आदि नहीं हो सकती। क्योंकि इसमें जो हाल है वह भंडारण के लिए बनाए गए हैं। ये एक सम्मेलन हॉल नहीं हैं

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: लेकिन सैक्रेटरी साहिब संपत्ति के अनुसार अगर पार्किंग आदि की समस्याओं को हल कर लिए जाएं तो संभव है कि इन हॉल में gathering की अनुमति मिल जाए। यही कारण है कि यह परस्पर विरोधी है। बहरहाल अभी इजाज़त मिलती है या नहीं लेकिन इस को इसी प्रकार रहने दें ताकि भविष्य में प्रयोग में आ सके। इसका और अधिक विभाजन आदि करने का कोई फायदा नहीं है। सम्भव है कि साल दो साल बाद आज्ञा मिल जाए, हो सकता है कि छोटे फ़ंक्शन की आज्ञा मिल जाए या किसी आपातकाल के मामले में इसका इस्तेमाल करना पड़े। मैं यह तो नहीं कह रहा कि उसे हमेशा उपयोग करना है। कम से कम अंसारुल्लाह वाले ही वहां दो तीन सौ लोगों का समारोह आयोजित कर सकते हैं। इसी तरह लजना भी अपने कुछ फंगशन को आयोजित कर सकते हैं और जब इजाज़त मिल जाए तो उसे जुम्अ: आदि के अवसर पर भी किया जा सकता है।

अतिरिक्त सैक्रेटरी संपत्ति (मस्जिद निर्माण के लिए)

*हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: मैंने जैसा पहले हिदायत दी है कि जब भी मस्जिद आदि निर्माण का मामला लेकर आना हो तो आप सैक्रेटरी संपत्ति के साथ आ सकते हैं।

अतिरिक्त सैक्रेटरी अमूरे ख़ारजा

* विदेश सैक्रेटरी, विदेश मामलों ने कहा कि वीज़ा आदि के मामले उन के सुपुर्द किए गए हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया, बाकी सारी दुनिया के लोगों को भारत के लिए वीज़ा मिल जाता है लेकिन यहां जर्मनी वालों को क्या कठिनाई है। अतिरिक्त सैक्रेटरी अमुरे ख़ारिजा ने बताया कि जिन लोगों ने दिल्ली, अमृतसर आदि के वीज़ा आवेदन किए थे उन सबको वीज़ा मिल गया था लेकिन जो वाघा सीमा के रास्ते भारत जाना चाहते थे केवल उन्हें किसी कारण से वीज़ा नहीं मिल सके। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: आपको जमाअतों में सर्कुलर करना चाहिए कि यदि आपको भविष्य में कादियान जाना है, तो अमृतसर या दिल्ली के अनुसार अपनी यात्रा की योजना बनाएं। क्योंकि जब लोग शिकायत करते हैं तो लोग शिकायतें करते हैं तो दूसरे रंग में करते हैं। तो आप लोग भी बता दिया करें। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "आपके दूतावास के साथ निरंतर संबंध होना चाहिए।" इससे पहले कि पूछ लिया करें कि जलसा के वीज़ा के लिए आप की क्या शर्तें हैं जो भी वे शर्तें बताते हैं, इसी तरह, वकालत तामीलु तंफीज़ के द्वारा कादियान से भी जानकारी ले लिया करें कि वे क्या सलाह देते हैं। वे होम आफिस से पता कर देते हैं लेकिन यह सारा काम अभी से शुरू हो जाना चाहिए ताकि जब लोगों ने वीज़ा अपलाई करना हो तो जमाअतों को सर्कुलर कर दें कि तुम ने इन शर्तों के अनुसार वीज़ा अपलाई करना है और फिर सर्कुलर का पीछा भी करना चाहिए कि प्रत्येक व्यक्ति तक संदेश पहुंच गया है? संबंधित सैक्रेटरी अमूरे खारजा से भी पूछा करें कि क्या तुम ने प्रत्येक व्यक्ति तक सर्कुलर पहुंच चुका है? ताकि बाद में आप पर कोई आरोप न आए। जो भी आरोप हों उनके ऊपर हों।

सैक्रेटरी वक्फ नौ

* हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: मुझे पता लगा है कि कुछ पढ़े लिखे लड़के लड़कियां जो बीस इक्कीस साल के हो गए हैं वह यह कहने लग गए हैं कि हमारे पास बहुत ज्ञान है, अब हमें सिलेबस आदि पढ़ने की कोई जरूरत नहीं है। इसलिए यह जो इक्कीस साल तक सिलेबस है वह प्रत्येक को पढ़ाएं और जिन्होंने पढ़ लिया उन्हें और किताबें दें और उन्हें recommend करें कि यह किताबें पढ़ें। दुनियावी ज्ञान प्राप्त करके ज्ञान प्राप्त कर के ज्ञान का इतना गर्व नहीं होना चाहिए।

सैक्रेटरी अमूरे आम्मा

*हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया कि कज़ा के फैसलों पर अनुकरण करवाना निकालना और माफी की रिपोर्ट ही केवल अमूरे आम्मा का काम नहीं है। अमूरे आम्मा के और भी बहुत सी बातें हैं जिस प्रकार बाकी के विभागों ने अपने काम की योजना बनाई है, इसी तरह आप भी तय्यार करें। व्यापार और उद्योग विभाग जिस प्रकार लिस्टें बना रहे है। आपको यह भी पता होना चाहिए कि आपके कितने लोग बेकार बैठे हैं। बेकार बैठने से ही मस्ले पैदा होते हैं इस तरह और अधिक रास्ते तलाश करें। ख़ुद्दामुल अहमदिया को भी ध्यान दिलाएं, अंसारुल्लाह को भी ध्यान दिलाएं कि ये लोग फारिग़ बैठे हैं, उन्हें काम में लाएं।

विभागों की समीक्षा के बाद, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने आमले का मेंम्बरों और जमाअत के सदरों को कुछ सामान्य निर्देश दिए।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad